

सरस्वती शिक्षक-दर्शिका

(‘रंगोली’ शृंखला परिचयार्थ)

③

लेखिका
गीता बुद्धिराजा

सन् 1950 से

सरस्वती हाउस प्रा०लि०

एजुकेशनल पब्लिशर्स
नई दिल्ली-110002

प्रकाशक :

अतुल गुप्ता

सरस्वती हाउस प्रा०लि०

9, दरियागंज, समीप टेलीफोन कार्यालय, नई दिल्ली-110002

पोस्ट बॉक्स : 7063**दूरभाष :** 43556600 (100 लाइंस), 23281022**फैक्स :** 43556688**ई-मेल :** delhi@saraswathihouse.com**वेबसाइट :** www.saraswathihouse.com**आयात-निर्यात लाइसेंस नं० :** 0507052021**शाखाएँ :**

1. 48, V मेन रोड, चामराजपेट, बंगलूरु-560018

दूरभाष : (080) 26619880, 26672813**फैक्स :** 26619880

2. एस०सी०ओ० 262, सेक्टर 32-डी, चंडीगढ़-160030

दूरभाष : (0172) 2624882

3. 10/34, महालक्ष्मी स्ट्रीट, टी० नगर, चेन्नई-600017

दूरभाष : (044) 24343740, 24346531, 24333508**फैक्स :** 24333508

4. 39/741, सुदर्शनम्, करिक्कामुरी क्रॉस रोड, एरनाकुलम साउथ, कोचि-682011

दूरभाष : (0484) 3925288, 3062576

5. 001, वास्तु सिद्धि, विंग-ए, वास्तु इन्क्लेव, आर० जे० रोड, पम्प हाउस,

अंधेरी (ईस्ट), मुंबई-400093

दूरभाष : (022) 28343022

6. 4, सीतायन अपार्टमेंट्स, विवेकानंद मार्ग, नॉर्थ एस०के० पुरी, पटना-800013

दूरभाष : (0612) 2570403**नवीन संस्करण****मूल्य : 16.00 रुपये****मुद्रक :** शारदा प्रेस प्रा०लि०, ग्रेटर नोएडा (उ०प्र०)**आमुख**

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) में यह सुझाव दिया गया है कि बच्चों को स्कूली जीवन के साथ-साथ आस-पास के बाहरी जीवन से भी जोड़ना चाहिए। यह सिद्धांत पुस्तकीय ज्ञान की उस परंपरा के विपरीत है, जिसके प्रभावशाली हमारी शिक्षा-व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और उस पाठ्यक्रम पर आधारित हमारी पाठ्यपुस्तकें एक नवीन प्रस्तुति हैं, जो बच्चों को रटने की प्रवृत्ति के घेरे से बाहर ले आएंगी। आशा है, यह प्रयास बाल-केंद्रित व्यवस्था को सार्थक बनाने में सफल होगा।

यह उचित है कि बच्चा अपने आस-पास के वातावरण से बहुत कुछ सीखता है। वह सबसे पहले भाषा ही सीखता है। सुनना और बोलना—यही दो क्रियाएँ हैं, जो वह सबसे पहले सीखता है। शिक्षण-प्रणाली में भाषा-शिक्षण बहुत ही महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि भाषा सभी के जीवन के लिए उपयोगी और सार्थक है। भाषा ही वह साधन है, जिसके माध्यम से हम विचारों का आदान-प्रदान तथा भावों की अभिव्यक्ति करते हैं। भाषा पर अधिकार होने पर समझो हमने सबके मन पर अधिकार कर लिया।

भाषा की योग्यता और कौशल के लिए चार सोपान हैं—सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना। सुनना और बोलना तो बच्चा घर में रहकर ही सीख लेता है। विद्यालय में उसे पढ़ना और लिखना सिखाया जाता है। यह कार्य अध्यापक/अध्यापिका करते हैं। शुद्ध भाषा और वर्तनी सीखना तथा सिखाना महत्वपूर्ण कार्य है। बच्चों की रुचि तथा स्वभाव को केंद्र में रखकर हमारा एक प्रयास पुस्तकीय शृंखला के रूप में आपके समक्ष है, जिसका नाम हमने 'रंगोली' रखा है, जो प्रवेशिका से लेकर आठवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए है। हमारी इस कोशिश को सफलता तभी मिलेगी, जब स्कूलों के प्राचार्य एवं शिक्षकगण बच्चों को विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों और क्रियाकलापों की सहायता से सीखने का मौका देंगे। अभी तक हमने शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी कर पाठ्यपुस्तक को ही परीक्षा का एकमात्र आधार बनाया है। आधुनिकता की दौड़ में सफलता तभी मिलेगी जब हम बच्चों को स्वयं सीखने का मौका देंगे।

यह सही है कि विद्यालय में अनुशासन का पालन अनिवार्य है। इसके लिए समय-तालिका का महत्वपूर्ण स्थान है, पर जिन उद्देश्यों को केंद्र में रखकर यह शृंखला निर्मित की गई है, उसके लिए दैनिक समय-सारिणी में लचीलापन जरूरी है, ताकि बच्चे छोटे-छोटे समूह बनाकर वार्तालाप तथा अन्य गतिविधियों का कार्यान्वयन स्वयं कर सकें।

विषय-सूची

• मेरी हिंदी : प्यारी हिंदी	(vi)
• शिक्षक-दर्शिका की आवश्यकता क्यों?	(vii) – (viii)
1. हम नन्हें-नन्हें बच्चे हैं.....	9
2. बगुला भगत.....	13
3. काली कोयल काली क्यों?.....	17
4. चंदा मामा.....	20
5. सबसे अच्छी मिठाई.....	24
6. गांधी जी की हिंसा.....	27
7. अंधेर नगरी चौपट राजा.....	30
8. अप्सरा का तोता.....	34
9. मीतू की प्रतिज्ञा.....	38
10. पाठशाला.....	41
11. गोबर बादशाह.....	44
12. पोंगल.....	47
13. उधार की हवा.....	51
14. फूलों की घाटी.....	54

तीसरी कक्षा में पहुँचकर बच्चों को हिंदी का ज्ञानानुभव तो हो जाता है, परंतु उसका चरमोत्कर्ष होना बाकी रहता है, इसी बात को ध्यान में रखते हुए **रंगोली** पुस्तकों की शृंखला तैयार करते समय पाठों का चुनाव बच्चों की बौद्धिक क्षमता तथा भाषा-स्तर को ध्यान में रखते हुए किया गया है। पाठों का क्रम सरल से कठिन रखा गया है। पाठ के आरंभ में कठिन शब्द तथा पाठ के अंत में शब्दार्थ दिए गए हैं। अभ्यास एवं रचनात्मक गतिविधियाँ बनाते समय यह ध्यान रखा गया है कि बच्चे स्वयं सोचें तथा आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों को प्रकट कर सकें। अध्यापक/अध्यापिकाओं को चाहिए कि वे बच्चों के विचारों की सराहना करें। उनमें आत्मविश्वास जागृत करने के लिए उनकी सोच तथा विचारों को ध्यानपूर्वक सुनें व समझें। बच्चे जब अपने विचारों को प्रकट करेंगे तो उन्हें नए-नए शब्दों की जानकारी होगी तथा उनका शब्द-भंडार भी बढ़ेगा। बच्चे भाषा को समझें, उन्हें रटे नहीं। उन्हें ऐसा ज्ञान दें, जो जीवन-भर उनका साथ दे। व्याकरण के नियमों और परिभाषाओं को रटने के लिए जोर न दें। व्यावहारिक व्याकरण का अभ्यास करवाएँ। **‘शिक्षक-दर्शिका’** आपकी सहायता के लिए है, इसमें उत्तर के केवल संकेत बिंदु दिए गए हैं। अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार विद्यार्थियों को स्वयं सही मार्गदर्शन करें।

‘रंगोली’ शृंखला की पृष्ठभूमि में निहित उद्देश्य को बच्चों तक सही ढंग से पहुँचाने के लिए शिक्षकों के लिए **शिक्षक-दर्शिका** का निर्माण किया गया है। आशा है, भाषा-शिक्षण की दिशा में किया गया यह प्रयास उपयोगी सिद्ध होगा। अनुभवी शिक्षकों तथा विद्वानों के सुझावों का स्वागत किया जाएगा, जिनसे भावी संशोधनों में मदद मिलेगी।

—लेखिका

**‘होठों पर मुस्कान हर मुश्किल कार्य को
आसान कर देती है।’**

मेरी हिंदी : प्यारी हिंदी

बच्चों में हिंदी के प्रति रुचि उत्पन्न हो सके, इसके लिए ज़रूरी है कि पुस्तक रोचक तथा आकर्षक हो। पाठ ज्ञानवर्धक तथा नई-नई जानकारियों के साथ-साथ विविधता लिए हुए हों। बच्चे हिंदी भाषा को बोझ न समझकर अपनी प्यारी भाषा समझकर पढ़ें।

इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हम आपके समक्ष 'रंगोली' नामक पुस्तकों की श्रृंखला लेकर आए हैं। इनमें भारतीय संस्कृति, कला, इतिहास, पुराण, लोक-कथा, त्योहार, महापुरुषों के जीवन से संबंधित रोचक प्रसंग, भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, भारतीय तथा विदेशी लेखकों की रचनाएँ, विज्ञान से संबंधित जानकारी आदि से जुड़े पाठ हैं। कविता, एकांकी, कहानी, लेख, जीवनी, निबंध, आत्मकथा, व्यंग्य, यात्रा-वृत्तांत, संस्मरण, साक्षात्कार आदि विधाओं का प्रयोग कर पाठ्यपुस्तकों को उच्चकोटि का बनाने का सफल प्रयास किया गया है।

साहित्यिक विधाओं के माध्यम से विद्यार्थियों के मन में देशभक्ति, प्रकृति-प्रेम, जीव-जंतुओं के प्रति प्रेम, दया, परोपकार, धैर्य, सत्य आदि मानव-मूल्यों को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

शिक्षक-दर्शिका की आवश्यकता क्यों?

सभी शिक्षक विद्वान हैं, फिर भी हमारा प्रयास है कि रंगोली के पाठ पढ़ाते समय कुछ मुख्य बिंदुओं को ध्यान में रखा जाए। इससे पाठ्यपुस्तकों के निर्माण में जो उद्देश्य लेकर हम चले, उसकी पूर्ति संभव हो जाएगी। जो निर्देश या सामग्री दी जा रही है, वह केवल मार्गदर्शन करने में सहायक होगी। समय, परिस्थिति तथा प्रसंगानुकूल आप उसमें अपने तथा बच्चों के विचार शामिल कर सकते हैं।

प्रस्तुत शिक्षक-दर्शिका में निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं के आधार पर पाठ-शिक्षण के लिए सुझाव दिए गए हैं :

1. प्रतिपाद्य विषय—इसमें आपकी सुविधा के लिए प्रत्येक पाठ का सार या प्रतिपाद्य विषय सरल भाषा में दिया गया है। ध्यान रखें कि बच्चे पाठ को स्वयं पढ़ें तथा उनके अर्थ निकालें। आवश्यकता पड़ने पर उन्हें समझाएँ।

2. मूलभाव—पाठ का मूलभाव दिया गया है, ताकि पाठ के उद्देश्य को भली-भाँति समझ सकें।

3. जीवन-मूल्य और दृष्टिकोण—आधुनिक युग ने सभी को स्वार्थी तथा आत्मकेंद्रित बना दिया है। अतः ज़रूरी है कि पाठ में जिन जीवन-मूल्यों को उभारा गया है, बच्चे उसकी सार्थकता को समझें तथा अपने उदार दृष्टिकोण को विकसित करें। बच्चों से भी जीवन-मूल्य तथा उनका दृष्टिकोण पूछा जा सकता है।

4. भाषागत योग्यताएँ और कौशल—पाठ्यपुस्तक और अभ्यास-पुस्तिका में दिए गए विभिन्न प्रकार के अभ्यासों द्वारा भाषा की योग्यताओं और कुशलताओं का क्रमिक विकास करवाया गया है।

5. विशेष—पाठ से संबंधित अन्य जानकारी देने या बच्चों से पूछने का प्रयास किया गया। इससे बच्चों की बौद्धिक क्षमता का परिचय मिलेगा तथा उनकी तार्किक तथा वैचारिक शक्ति का विकास होगा।

6. सरलार्थ—कठिन गद्य तथा काव्य-पंक्तियों का सरलार्थ दिया गया है, ताकि बच्चों को आसानी से समझाया जा सके।

7. पाठ्य तथा अभ्यास-पुस्तिका का अभ्यास—सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, चिंतन तथा अध्ययन संबंधी कुशलताओं को विकसित करने के लिए पाठ के अंत में अभ्यास दिए गए हैं। इस पुस्तक में उनके उत्तर या संकेत बिंदु दिए गए हैं। कुछ सरल प्रश्नों के उत्तर और कुछ ऐसे प्रश्नोत्तर कि जिन्हें बच्चे अपने अनुभव के आधार पर लिखेंगे, वे नहीं दिए गए हैं।

उपरिलिखित मुख्य बिंदुओं के साथ-साथ कक्षा में वाचन अवश्य करवाएँ। शिक्षक पहले स्वयं पढ़ें, फिर बच्चे उच्च स्वर में पढ़ें। कठिन शब्दों, वाक्यों या अनुच्छेद का श्रुतलेख अवश्य करवाएँ। यदि बच्चे अपनी अशुद्धियाँ स्वयं निकालें तो दोबारा गलती होने की संभावना कम हो जाती है। अशुद्धियों को तीन-तीन बार लिखने के लिए कहें। भाषा को सीखने-सिखाने में बच्चे विषय को समझें, रटे नहीं। व्याकरण में नियम तथा परिभाषा रटवाएँ नहीं। भाषा में प्रश्नों के उत्तर अलग-अलग ढंग से दिए जा सकते हैं, इसलिए तर्कसंगत उत्तर को भी ठीक समझा जाए। यह पुस्तक आपकी सहायता के लिए है। इससे केवल संकेत ग्रहण कर बच्चों का स्वयं मार्गदर्शन करें।

1. हम नन्हें-नन्हें बच्चे हैं

प्रतिपाद्य विषय :

प्रस्तुत कविता में देश-प्रेम की भावना को प्रतिपादित करते हुए अपने राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान और आदर के भाव को व्यंजित किया गया है। हिमालय पर्वत की महानता और देश की उन्नति हेतु प्राण-बलिदान करने की भावना को भी प्रतिपादित किया गया है।

मूलभाव :

देश के प्रति कर्तव्य बोध जाग्रत करना कविता का मूलभाव है। साहसी, दृढ़-निश्चयी, निडर और प्रगतिशील बच्चे ही कल के भावी नागरिक हैं। अतः देश के प्रति समर्पण का भाव बचपन से ही विकसित करना आवश्यक है।

जीवन-मूल्य और दृष्टिकोण :

भारत देश पर गर्व करना, उसके गौरव की रक्षा करने की भावना उत्पन्न करना तथा बच्चों को निडर बनने की प्रेरणा देना।

भाषागत योग्यताएँ और कौशल :

कविता के मूलभाव को समझना, संयुक्ताक्षर, कठिन शब्दों का अभ्यास, राष्ट्रीय ध्वज के बारे में जानकारी।

काव्य-पंक्तियों का सरलार्थ :

- नादान उमर के कच्चे हैं,
पर अपनी धुन के सच्चे हैं।

नन्हें-मुन्नें बच्चों का कहना है कि उनकी उम्र कम जरूर है, पर उनके इरादे बड़े ही मज़बूत हैं। यदि एक बार वह कोई बात ठान लेते हैं, तो उसे पूरा करने की धुन में लग जाते हैं।

- हम हिमगिरि पर चढ़ जाएँगे,
बच्चों का कहना है कि वे साहसी हैं। वे हिमालय के ऊँचे-ऊँचे

शिखरों पर चढ़ने की हिम्मत रखते हैं। हिमगिरि से तात्पर्य है—उन्नति और प्रगति के पथ पर अग्रसर होना।

• अपनी ताकत को तोलेंगे,

अपने देश पर गर्व ही देश-प्रेम की पहली पहचान है। हमें देश पर गर्व तभी होगा, जब हम देश की शक्ति से उसके स्वर्णिम इतिहास को जानेंगे, उसकी वैज्ञानिक उन्नति और कला-संस्कृति से परिचित होंगे।

पाठ्यपुस्तक का अभ्यास

पाठ-ज्ञान

- (क) देशभक्ति (ख) भारतमाता
- (ग) देश-प्रेम का पथ (घ) सिर

भाषा-ज्ञान

- बच्चे स्वयं पढ़कर समझेंगे और इसी प्रकार के अन्य शब्दों का अभ्यास करेंगे।

लिखो

- कठिन शब्दों के अभ्यास से वर्तनी संबंधी अशुद्धियों में सुधार होगा।

बताओ

1. केसरिया — केसरिया रंग बलिदान का प्रतीक है।
सफ़ेद — सफ़ेद रंग शांति का प्रतीक है।
हरा — हरा रंग हरियाली का प्रतीक है।
2. भारत के झंडे के बीच में बना चक्र नीले रंग का है और यह सारनाथ स्थित अशोक स्तंभ से लिया गया है।
3. भारत के झंडे में बने चक्र में कुल चौबीस तीलियाँ हैं।
4. चक्र उन्नति, प्रगति और विकास का प्रतीक है।

खेल-खेल में

- राष्ट्रीय ध्वज का चित्र बनाने से बच्चे उससे भावनात्मक रूप से जुड़ेंगे और उनकी चित्रात्मक-शैली का विकास होगा।

रंगोली अभ्यास-पुस्तिका (भाग-3)

पुनरावृत्ति

- | | | | | |
|--------|------|-----|------|------|
| 1. बोल | मोटी | मार | छड़ी | काला |
| पोल | रोटी | कार | लड़ी | माला |
| मोल | गोटी | तार | कड़ी | नाला |
| खोल | छोटी | सार | पड़ी | बाला |
| तोल | खोटी | चार | खड़ी | लाला |
-
- | | | | | | |
|--------|-----|------|------|------|------|
| 2. मना | महल | हल | गाना | गीता | चूहा |
| नाता | चहल | जाना | ताना | ताल | लचक |
-
- | | | | | | |
|---------|------|----|-----|----|--|
| 3. धारा | नाला | मन | रात | | |
| दीन | राह | बस | कान | तल | |
-
- | | | | | | |
|---------|--------|--|--|--|--|
| 4. पीला | लाल | | | | |
| हरा | गुलाबी | | | | |
-
- | | | | | | |
|---------|--------|------|--|--|--|
| 5. हाथी | बिल्ली | पेड़ | | | |
| कबूतर | चूहा | झंडा | | | |
-
- | | | | | |
|----------|---------|--------|----------|--------|
| 6. सोहन, | दिल्ली, | कविता, | अमर, | सीता। |
| ऋषभ, | नेहा, | मीरा, | गुड़िया, | अक्षय। |
-
- | | | | | |
|---------|-------|-------|------|------|
| 7. शेर, | मेज़, | रोटी, | बैग, | सेब। |
|---------|-------|-------|------|------|
-
- | | | | | |
|---------|-------|-------|-------|-------|
| 8. मोर, | मोहन, | मोटा, | मोना, | मोची। |
| सोम, | सोना, | सोहन, | सोकर, | सोच। |
| कम, | कहा, | कर, | कसम, | कब। |
-
- | | |
|----------------|-------------|
| 9. गाना — जाना | रोता — सोता |
| सोना — मोना | रहते — सहते |
| हाथी — साथी | आते — जाते, |
| मेला — चेला | |
-
- | | | | | |
|----------|-------|------|-------|--------|
| 10. दुख, | अधिक, | गलत, | जाना, | बैठना। |
|----------|-------|------|-------|--------|
-
- | |
|------------------------------------|
| 11. सबक — कमल — लड़का — काम — मटका |
| टिकट — टब — बकरी — रीमा — माला |

12. अनुस्वार शब्द (ँ) अनुनासिक शब्द (ँ)

अंदर	चाँद
मंदिर	हँसना
नंदन	माँ

1. हम नन्हें-नन्हें बच्चे हैं

- कच्चे सच्चे
उड़ाएँगे चढ़ाएँगे
तोड़ेंगे जोड़ेंगे
- नादान — नासमझ भय — डर
माता — जननी ताकत — शक्ति
ध्वजा — झंडा प्रण — प्रतिज्ञा
पथ — रास्ता हिम्मत — साहस
- हम नन्हें-नन्हें बच्चे हैं,
नादान उमर के कच्चे हैं,
पर अपनी धुन के सच्चे हैं।
जननी की जय-जय गाएँगे,
भारत की ध्वजा उड़ाएँगे।
- (क) जननी की (च) भारत की ध्वजा
(ख) अपना पथ (छ) भय से
(ग) अपना प्रण (ज) ताकत को
(घ) हिम्मत से (झ) अपना सिर
(ङ) हिमगिरि पर

5. अनुस्वार शब्द (ँ) अनुनासिक शब्द (ँ)

अंदर	चाँद
नन्हें	गाएँगे
हैं	उड़ाएँगे
छोड़ेंगे	जाएँगे
डोलेंगे	चढ़ाएँगे
बोलेंगे	

नाम	पद
डॉ० राजेंद्र प्रसाद	राष्ट्रपति
डॉ० राधाकृष्णन	राष्ट्रपति
श्री लाल बहादुर शास्त्री	प्रधानमंत्री
श्रीमती इंदिरा गांधी	प्रधानमंत्री
श्री जवाहरलाल नेहरू	प्रधानमंत्री

- हम अपने देश की रक्षा के लिए अपनी जान देने के लिए सदा तैयार रहेंगे।

- देश को सदा साफ़-सुथरा रखेंगे।
- देश के झंडे को झुकने न देंगे।
- देश की प्रशंसा करेंगे।
- ऐसे काम करेंगे, जिससे देश का नाम ऊँचा हो।



2. बगुला भगत

प्रतिपाद्य विषय :

‘बगुला भगत’ एक लोक-कथा है। जिसमें बगुला अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए तालाब सूखने से पहले मछलियों को दूसरे तालाब में सुरक्षित पहुँचाने का ढोंग रचता है। बगुला अपनी चालाकी से मछलियों को नए तालाब का लालच देकर अपना शिकार बना लेता है। एक-एक कर सभी मछलियाँ उसकी बातों में आ जाती हैं। अंत में तालाब में एक केकड़ा बचता है। वह उसे भी अपना शिकार बनाना चाहता है, परंतु केकड़ा अपनी सूझ-बूझ के कारण न केवल बच जाता है वरन् धूर्त बगुले को भी मार देता है।

मूलभाव :

‘बगुला भगत’ कहानी का मूलभाव यही है कि धूर्त और दुष्ट व्यक्ति सदा सुखी नहीं रहते। एक-न-एक दिन उनकी करनी का फल उन्हें अवश्य मिलता है। बगुला भगत की बातों के जाल में आकर मछलियों

ने अपनी जान गँवा दी, पर केकड़ा बुद्धिमान था, अतः वह बगुले को सबक सिखा देता है।

जीवन-मूल्य और दृष्टिकोण :

बच्चों को संदेश देना कि धूर्त और दुष्ट प्राणी सदा सुखी नहीं रहते, बुद्धि बल से ही दुष्ट की समाप्ति की जाती है। आँखें बंद कर किसी की बात पर विश्वास नहीं करना चाहिए, वरन् अपने विवेक का सहारा लेकर अच्छे-बुरे की पहचान करनी चाहिए।

भाषागत योग्यताएँ और कौशल :

वचन बदलो तथा विलोम शब्दों की जानकारी, 'र' तथा 'र्' का प्रयोग, कठिन शब्दों का अभ्यास, संवाद-योजना, द्वित्व व्यंजनों का परिचय।

कठिन पंक्तियों का सरलार्थ :

- एक बगुले ने सारे बगुला समाज को बदनाम कर रखा है।

बगुले द्वारा नए तालाब का लालच दिखाने पर मछलियाँ अपनी शंका व्यक्त करती हैं कि बगुले कभी मछलियों का हित नहीं चाह सकते। इस पर बगुला जवाब देता है कि यह बात सही नहीं। एक बगुले ने मछलियों को नुकसान पहुँचाया था तो उस वजह से सारी बगुला जाति ही बदनाम हो गई। सारे बगुले तुम्हारे दुश्मन नहीं हैं।

पाठ्यपुस्तक का अभ्यास

पाठ-ज्ञान

1. (क) तालाब में ढेर सारी मछलियाँ रहती थीं।
(ख) तालाब के किनारे बैठा बगुला तालाब की मछलियों से अपना पेट भरने का उपाय सोच रहा था।
(ग) बगुले ने मछलियों को मृत्यु के मुख से बचने का यह उपाय बताया कि वह एक-एक करके सभी मछलियों को अपनी चोंच में पकड़कर दूर एक बड़े तालाब में छोड़ आएगा।
(घ) बगुला तालाब में से एक मछली ले जाता और दूर जंगल में

एक बड़े तालाब के किनारे बड़ी चट्टान पर बैठ उसे मारकर खा जाता।

(ङ) केकड़ा चालाक था। उसे बगुले पर विश्वास नहीं था, इसलिए उसने शर्त रखी कि वह बगुले की गरदन पर बैठकर चलेगा। जब केकड़ा चट्टान के पास पहुँचा, तो हड्डियों के ढेर को देखकर सब कुछ समझ गया। उसने बगुले की गरदन में डंक गड़ाए और उसे तालाब तक चलने पर मजबूर कर दिया। तालाब के किनारे पहुँच उसने बगुले की गरदन दबाकर उसे खत्म कर दिया। इस प्रकार अपनी सूझ-बूझ से केकड़े ने अपनी जान बचाई।

2. बच्चे स्वयं कहानी पढ़कर क्रम-संख्या लिखेंगे।

भाषा-ज्ञान

1. मछलियाँ	बगुले
हड्डियाँ	केकड़े
कलियाँ	कमरे
नदियाँ	पंखे
नालियाँ	घोड़े
2. सरदी	रात
प्रसन्न	तेज
जीवन	पास
बुरा	गलत

3. बच्चे 'र' के विभिन्न रूपों को पढ़कर समझेंगे। साथ ही वर्ण, स्वर तथा व्यंजन एवं वर्ण-विच्छेद करना सीखेंगे।

लिखो

- कठिन शब्दों के प्रयोग से शुद्ध भाषा लिखने तथा पढ़ने का अभ्यास होगा।

बताओ

1. बच्चे स्वयं अपने दैनिक जीवन के अनुभवों से उत्तर लिखेंगे; जैसे

पढ़ने के लिए शर्त, अपना बिस्तर स्वयं उठाने के लिए शर्त, छोटे भाई को पढ़ाने के लिए शर्त आदि।

- केकड़े की जगह स्वयं को रखकर अपनी रक्षा के उपाय सोचने के क्रम में बच्चों में विश्लेषण शक्ति का विकास होगा।

खेल-खेल में

- बच्चों की कलात्मक अभिरुचि के विकास के साथ-साथ उनकी समुद्रीय जीवों के प्रति जानकारी भी बढ़ेगी।

अभ्यास-पुस्तिका

- मछलियाँ, बगुला, मछलियों, मछलियों, पानी,
मछलियाँ, मछलियों, बगुला, मछली, जंगल,
चट्टान, मछलियाँ, केकड़ा, केकड़ा, बगुले,
चट्टान, मछलियों हड्डियाँ, बगुले, केकड़े,
बगुले।

- विशेषता नाम
धूर्त बगुला
भोली मछलियाँ
बड़ा तालाब
बड़ी चट्टान
चालाक केकड़ा

- (क) दुष्ट – दुष्ट व्यक्तियों से बचकर रहना चाहिए।
(ख) विश्वास – सच बोलने वाले की बात पर सभी विश्वास करते हैं।

(ग) चट्टान – चट्टान कठोर होती है।

(घ) खत्म – हमें सभी कार्य समय पर खत्म करना चाहिए।

(ङ) व्यक्ति – परिश्रमी व्यक्ति सदा सफल होते हैं।

- चाल – हाथी की चाल बहुत मस्त होती है।

टेढ़ी चालें चलने वाला सफल नहीं होता।

फल – मुझे फल खाने अच्छे लगते हैं।

बुरे काम का फल बुरा होता है।

कर – उसने आयकर जमा करवा दिया।

हमें दोनों कर जोड़कर प्रार्थना करनी चाहिए।

- दश गरम
फली चल
पाना मर
पट सुख
बदसूरत अमंगल
बदमिजाज अपठित
बदकिस्मत अशिक्षित

- (क) बगुला मछलियों को खाकर अपना पेट भरना चाहता था।
(ख) बगुले ने एक मछली को तालाब दिखलाया। मछली ने बड़े तालाब का बड़ा ही सुंदर वर्णन किया। अपनी इसी चालाकी से बगुले ने मछलियों का विश्वास जीता।
(ग) जब बगुला अपनी गरदन पर केकड़े को लेकर चट्टान के पास पहुँचा, तब केकड़ा मछलियों की हड्डियों का ढेर देख बगुले की धूर्तता को समझ गया।
(घ) केकड़े ने बगुले की गरदन दबाकर उसे खत्म कर दिया।

- दुष्ट × सज्जन गंदा × साफ़
उदास × प्रसन्न चालाक × मूर्ख
कम × अधिक सुख × दुख
दूर × पास बड़ा × छोटा



3. काली कोयल काली क्यों?

प्रतिपाद्य विषय :

लोककथा 'काली कोयल काली क्यों' में कोयल के काली होने की कहानी वर्णित है। सोनल चिड़िया को अपने सुनहरे पंखों पर बहुत घमंड

था। सभी का दुलार पाकर वह स्वयं को जंगल की रानी समझने लगी थी। ऊँची उड़ान के लालच में एक दिन अचानक सूरज की किरणों से झुलस जाने के कारण वह काली पड़ गई। बूढ़े बरगद बाबा की इस सीख को कि 'संसार में गुणों की ही कद्र होती है' अपनाने पर काली कोयल अपने मीठे गाने व मीठी बोली के कारण एक बार फिर सबकी दुलारी बन गई।

मूलभाव :

काली कोयल की कहानी के माध्यम से यही बात सिद्ध होती है कि प्राणी को अपने रूप-रंग पर घमंड नहीं करना चाहिए। कोयल ने इस सत्य को अपने अनुभव से समझ लिया था इसीलिए वह संतुष्ट व सुखी थी। मीठी वाणी से सभी का मन जीता जा सकता है।

जीवन-मूल्य और दृष्टिकोण :

जीवन में रंग-रूप का कोई खास महत्त्व नहीं होता। सद्गुणों का विकास जैसे मीठी वाणी, परोपकार, मददगार, प्रशंसा करना इत्यादि का प्रतिपादन।

भाषागत योग्यताएँ और कौशल :

उचित शब्द-प्रयोग, विशेषण तथा विशेष्य की पहचान, शब्द-भंडार की वृद्धि करना, रिक्त स्थान भरना पर्यायवाची; जैसे-नभ, सूरज आदि।

पाठ्यपुस्तक का अभ्यास

पाठ-ज्ञान

1. (क) चिड़ियों की सरदार एक सुनहरी चिड़िया थी। उसे सब प्यार से सोनल पुकारते थे।
- (ख) ज्यादा लाड़-प्यार पाकर सुनहरी चिड़िया अपने-आपको जंगल की रानी समझने लगी थी।
- (ग) सोनल का सुनहरा शरीर ऊँची उड़ान भरने पर सूरज की गरमी से झुलस गया था।
- (घ) सोनल उदास रहने लगी, क्योंकि उसका सुनहरा रंग काला पड़ गया था।

(ङ) बूढ़े बाबा ने सोनल को उदास देखकर उसे समझाया कि इस दुनिया में रूप-रंग का कोई महत्त्व नहीं है। लोग उसी को अच्छा मानते हैं, जिसमें गुण हों।

2. (क) रंग-बिरंगी (घ) सोनल
(ख) चहचहाहट (ङ) सुनहरा
(ग) चमकीली (च) छटपटाती

भाषा-ज्ञान

1. दर्दनाक	कोमलता	साधुत्व	चहचहाहट।
2. विशेषण	विशेष्य	विशेषण	विशेष्य
घना	जंगल	सुनहरे	पंख
मोटी-पतली	चिड़ियाँ	छोटे-बड़े	जानवर
सुनहरी	चिड़िया	चमकीली	आँखें
स्वर्ण	परी	बूढ़े	बाबा
नीला	आसमान	दमकती	काया

लिखो

- कठिन शब्दों का अभ्यास शुद्ध भाषा ज्ञान हेतु अनिवार्य है।

बताओ

- बरगद के पेड़ के माध्यम से विभिन्न पेड़-पौधों से हमें क्या-क्या मिलता है, यह भी जानेंगे।

खेल-खेल में

- कोयल को ढूँढ़ने की प्रक्रिया से बौद्धिक क्षमता का क्रियात्मक विकास होगा।

अभ्यास-पुस्तिका

1. बच्चे स्वयं करेंगे।
2. अंडे, संग, जंगल, गंगा, रंग-बिरंगा, लंबी, सुंदर, पंख।
3. स्व — स्वप्न, स्वस्थ
ग्ध — दग्ध, स्निग्ध

च्छ – स्वच्छ, अच्छा
 प्य – प्यास, प्यारा
 ज्य – ज्यादा, ज्यों
 ध्य – ध्यान, अध्याय
 द्व – द्वारा, द्वंद्व

4. (क) लंबी (ख) सीधे (ग) अच्छा
 (घ) सुनहरे (ङ) सुनहरा
5. (क) ऊँचाई, (ख) गरमी, (ग) काले,
 (घ) छटपटाती, (ङ) टहनियों।
6. काली – मकड़ी लाल – चोंच
 नीला – आसमान गुलाबी – फ्रॉक
 हरा – कपड़ा सफ़ेद – बगुला
 पीला – गुलाब
7. (क) (1) सोनल चिड़िया बहुत सुंदर थी।
 (2) सोनल चिड़िया नीले आकाश में लंबी उड़ान भरती थी।
 (ख) सूरज की गरमी के कारण सोनल के पंख काले पड़ गए।
 (ग) सोनल की सेवा बूढ़े बरगद बाबा ने की।
 (घ) लोग उसी को अच्छा मानते हैं, जिसमें गुण हों।
8. सूरज – सूर्य
 नभ – गगन
 जंगल – वन
 आँख – नेत्र
 गंगा – भगीरथी



4. चंदा मामा

प्रतिपाद्य विषय :

‘चंदा मामा’ कविता प्रकृतिपरक है। इस कविता में रात व चाँद के मधुर संबंध को दर्शाया गया है। निशा मामी का घूमने का मन हुआ,

इसलिए वह हवेली, सागर, जंगल व पहाड़ की चोटी पर मस्त होकर नाचने लगी। तभी उसके गले में पड़ा मोतियों का हार टूट कर बिखर गया। मामी रोने लगी। चंदा मामा भले हैं, इसलिए उन्हें तनिक भी गुस्सा न आया। वह अपने भोलेपन में कह उठे कि चलो दीपक लेकर मोती बीन लेते हैं। चाँद, रात और तारों की इस दिलचस्प कहानी से प्रकृति की सुंदरता को प्रतिपादित किया गया है।

मूलभाव :

प्रकृति के विभिन्न उपादानों के प्रति सौंदर्य-बोध जगाना और संवेदनशील बनाना ही इस कविता का मूलभाव है। चाँद की चाँदनी, गहरी रात की मस्ती और टिमटिमाते तारों के ताना-बाना से बुनी यह कथा प्रकृति की अद्भुत लीला से परिचित कराती है।

जीवन-मूल्य और दृष्टिकोण :

जीवन में निराश न होने की प्रेरणा देना, प्राकृतिक सुंदरता के प्रति संवेदनशील होना, ब्रह्मांड के रहस्यों के प्रति जिज्ञासु प्रवृत्ति जगाना तथा जीवन को आनंदपूर्ण बनाना।

भाषागत योग्यताएँ और कौशल :

नए-नए शब्दों का निर्माण, रचनात्मक कार्य, पर्यायवाची शब्द (जंगल, सागर, पहाड़ आदि) युग्म शब्द (सखी-सहेली, दाएँ-बाएँ आदि) चंद्रबिंदु का प्रयोग।

कठिन पंक्तियों का सरलार्थ :

- आओ नाचें, उसके जी में

यह तरंग उठ आई॥

निशा मामी ने जब सुंदर हवेली देखी, तो उसके मन में यह विचार जागा कि वह आज जी भर कर नाच ले। उसका मन खुशी से झूम उठा। धरती की सुंदरता देखकर वह स्वयं को न रोक सकी। उन्मुक्त भाव से नाचने को उसका मन ललचाने लगा।

पाठ्यपुस्तक का अभ्यास

पाठ-ज्ञान

- (क) निशा मामी अकेली ही घूमने इसलिए चली गई, क्योंकि वह घर में अकेली थी और चंदा मामा कचहरी गए थे।
(ख) निशा मामी सागर, जंगल और पहाड़ की चोटी पर नाचीं।
(ग) निशा मामी का हार मोतियों से बना है।
(घ) निशा मामी मस्त होकर नाच रही थी, इसलिए उनका हार टूट गया।
(ङ) निशा मामी को रोते देखकर चंदा मामा ने उन्हें दिलासा देते हुए कहा कि चलो, दीया लेकर आकाश में बिखरे मोती बीनने चलते हैं।

भाषा-ज्ञान

- हार — गले में पहनने वाला हार अर्थात् आभूषण।
हार — जीत का विलोम अर्थात् पराजय।
- ‘वाला’ शब्द से बने नए शब्द—
घरवाला, ऊपरवाला, सब्जीवाला, चायवाला आदि।

लिखो

- कठिन शब्दों के अभ्यास से वर्तनी में सुधार होगा।

बताओ

- बच्चे स्वयं अपने अनुभव से उत्तर देंगे; जैसे—तारें, सड़क व चौराहे पर चमकती बिजली, जुगनू, उल्लू की आँखें आदि।
- बच्चे अलग-अलग उत्तर देंगे।

खेल-खेल में

- चाँद का झूमर बनाने से बच्चों का न केवल मनोरंजन होगा, बल्कि सृजनात्मक रुचि का भी विकास होगा।

अभ्यास-पुस्तिका

- (क) चंदा मामा गए कचहरी,
घर में रहा न कोई।
मामी निशा अकेली घर में,
कब तक रहती सोई॥
(ख) चली घूमने साथ न लेकर,
कोई सखी-सहेली।
देखी उसने सजी-सजाई,
सुंदर एक हवेली॥
- वकील — कचहरी (कोर्ट) पायलट — एयरपोर्ट
डॉक्टर — अस्पताल नर्स — अस्पताल
अध्यापक — स्कूल प्रधानाचार्य — स्कूल
दुकानदार — दुकान किसान — खेत
- कोई — सोई समाई — आई
सहेली — हवेली होती — मोती
बाएँ — दिशाएँ आए — लटकाए
- बहुत अधिक प्रसन्न होना
विचार आना
निराश होना
- पाकर जाकर सोचकर
हारकर चढ़कर
लेकर छोड़कर
- बच्चे स्वयं कविता लिखेंगे। इससे उनकी रचनात्मक क्षमता तथा भावाभिव्यक्ति दृढ़ होगी।
- पर्वत — पहाड़ चाँद — चंदा
गृह — घर वन — जंगल
दीपक — दीया

5. सबसे अच्छी मिठाई

प्रतिपाद्य विषय :

तेनालीराम के प्रसिद्ध किस्से ‘सबसे अच्छी मिठाई’ में सर्दियों के मौसम को सबसे अच्छा बताया गया है, क्योंकि इस मौसम में तरह-तरह के फल तथा मिठाइयाँ मिलती हैं, जिन्हें खाकर पूरी तरह स्वस्थ रह सकते हैं। कृष्णदेव राय, तेनालीराम तथा राजपुरोहित में इसी बात पर बहस होती है कि कौन-सी मिठाई सबसे अच्छी है। तब तेनालीराम दोनों को रात में नदी-किनारे खेतों पर ले जाता है। वहाँ गरीब किसानों से गुड़ लेकर राजा को खिलाता है। राजा को अहसास होता है कि हलुवा, पिस्ता, बरफ़ी और मालपुआ जैसी महँगी मिठाइयों के मुकाबले गुड़ जो गरीबों की मिठाई है, कहीं अधिक स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक है।

मूलभाव :

सरदी के मौसम से संबंधित जानकारी देना ही इस किस्से का मूलभाव है। सरदी में सरदी से बचने के लिए खाई जाने वाली मीठी चीजें, उनकी गुणवत्ता तथा स्वाद का अहसास दिलाना।

जीवन-मूल्य और दृष्टिकोण :

विभिन्न ऋतुओं की जानकारी देना, विभिन्न मिठाइयों की गुणवत्ता से परिचित कराना, किसानों के जीवन का परिचय देना।

भाषागत योग्यताएँ और कौशल :

उचित वाक्य प्रयोग, लिंग-परिवर्तन का अभ्यास, वाक्यों को अपने शब्दों में लिखने का अभ्यास व कठिन शब्दाभ्यास।

पाठ्यपुस्तक का अभ्यास

पाठ-ज्ञान

1. (क) सरदी के मौसम में राजा कृष्णदेव राय, तेनालीराम तथा राजपुरोहित सबह की गर्म धूप का आनंद ले रहे थे।

- (ख) फल और मिठाई की बात सुनकर राजा ने राजपुरोहित से पूछा कि सर्दियों की सबसे अच्छी मिठाई कौन-सी है?
- (ग) राजा के यह पूछने पर कि सर्दियों की सबसे अच्छी मिठाई कौन-सी है, राजपुरोहित ने उत्तर दिया कि हलुवा, मालपुआ तथा पिस्ता बरफ़ी सर्दियों की सबसे अच्छी मिठाइयाँ हैं।
- (घ) सबसे अच्छी मिठाई के बारे में तेनालीराम ने राजा से कहा कि वह उसका नाम तो नहीं बता सकता, पर अगर वे रात को उसके साथ चलें, तो वह खिला अवश्य सकता है।
- (ङ) तेनालीराम ने राजा तथा राजपुरोहित को गुड़ खिलाया। गुड़ शरद ऋतु की सबसे अच्छी तथा मीठी मिठाई है और यह ठंड के मौसम में शरीर को गरमाहट भी देती है।
- (च) बच्चों अपने रुचि के अनुसार उत्तर देंगे।

2. बच्चों को छोटे-छोटे वाक्य बनाने के लिए प्रेरित किया जाए।

भाषा-ज्ञान

1. राजा — रानी शेर — शेरनी
नर — नारी आदमी — औरत
मोर — मोरनी लड़का — लड़की
2. (क) राजपुरोहित सुबह की गर्म धूप सेंक रहे थे।
(ख) राजपुरोहित का मन मिठाई का नाम सुनते ही मिठाई खाने को कर गया।
(ग) यह ठंड के मौसम में शरीर को गरमी पहुँचाती है।

लिखो

- कठिन शब्दों का अभ्यास बच्चे स्वयं करेंगे।

बताओ

1. सरदी के मौसम में गुड़, खजूर, मूँगफली की पट्टी, शहद आदि खाने से शरीर को गरमी मिलती है।
2. गरमी के मौसम में शिकंजी, आम पन्ना, लस्सी, शरबत और ठंडाई आदि पीने से शरीर को ठंडक मिलती है।

3. गुलाबजामुन	बरफ़्री	जलेबी	रसगुल्ला
4. फल	मिठाई	अनाज व दालें	
आम	रसगुल्ला	गेहूँ	
केला	जलेबी	बाजरा	
जामुन	पेड़ा	राजमा	
अंगूर	राजभोग	चने	

6. गरमी (ग्रीष्म)	वर्षा (पावस)
सरदी (शीत)	पतझड़
बसंत	



6. गांधी जी की हिंसा

प्रतिपाद्य विषय :

‘गांधी जी की हिंसा’ कविता में गांधी व जवाहरलाल नेहरू जी के आपसी संबंधों की मधुरता को प्रतिपादित किया गया है। एक बार रात के अँधेरे में नेहरू जी गांधी जी की लाठी से टकरा गए। कुछ क्रोधित हो उन्होंने गांधी जी को ताना दिया कि वे तो अहिंसा के पुजारी हैं, फिर लाठी क्यों अपने पास रखते हैं। गांधी जी ने मजाक में कह दिया कि तुम जैसे ऊधमी/शरारती लड़कों को नियंत्रण में रखने के लिए लाठी रखनी पड़ती है। इस बात पर दोनों महापुरुष खुलकर हँस पड़े।

मूलभाव :

दो महापुरुषों के जीवन में हल्की-फुल्की हँसी की फुहारें आपसी संबंधों को कैसे मजबूत बनाती हैं—यही इस कविता का मूलभाव है। नेहरू जी का लाठी को लेकर किया गया ताना और गांधी जी का सहज भाव से दिया गया सरस उत्तर, गांधी जी के मूल सिद्धांत ‘अहिंसा’ पर भी प्रकाश डालता है।

जीवन-मूल्य और दृष्टिकोण :

देश के महापुरुषों के विनोदी स्वभाव की जानकारी देना व अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा।

भाषागत योग्यताएँ और कौशल :

अनेकार्थक शब्दों की जानकारी, तुक मिलाकर शब्दों का निर्माण, समानार्थक शब्द, संज्ञा शब्दों की पहचान तथा मानसिक व काल्पनिक शक्तियों का विकास।

खेल-खेल में

- जलेबी,
- रसगुल्ला।

अभ्यास-पुस्तिका

- (क) राजपुरोहित ने राजा से
(ख) राजा ने राजपुरोहित तथा तेनालीराम से
(ग) तेनालीराम ने राजा से
(घ) राजा ने तेनालीराम से
- सर्दियाँ, कलियाँ, टोकरियाँ, लड़कियाँ, डालियाँ।
- अच्छी, मिठाई, ऋतु, मीठी, गुड़, स्वस्थ।
- (क) राजा कृष्णदेव राय को शीत ऋतु सबसे ज्यादा अच्छी लगती थी, क्योंकि इस ऋतु में कुछ भी खाकर पूरी तरह स्वस्थ रह सकते हैं।
(ख) राजा के मुख से खाने की बात सुनकर राजपुरोहित के मुँह में पानी आ गया था।
(ग) राजपुरोहित ने हलुवा, मालपुआ तथा पिस्ता बरफ़्री खाई।
(घ) तेनालीराम राजा को नदी के किनारे खेतों के पास ले गए।
(ङ) गुड़ खाने से ठंड के मौसम में शरीर को गरमाहट मिलती है।
- (क) राजा कृष्णदेव राय, तेनालीराम, राजपुरोहित।
(ख) राजा, ऋतु।
(ग) सर्दियों, फल, मिठाइयाँ।
(घ) राजपुरोहित, हलुवा, मालपुआ, पिस्ता बरफ़्री।

काव्य-पंक्तियों का सरलार्थ :

• आप तो प्रेम-अहिंसा के हामी हैं

जवाहरलाल नेहरू जी गांधी जी को याद दिलाते हुए कहते हैं कि वे तो सदा प्रेम और अहिंसा के मार्ग पर चलने के पक्ष में रहे हैं। इसी संदेश का प्रसार-प्रचार वे करते हैं फिर लाठी, जो कि हिंसा का प्रतीक है, को सदैव अपने साथ क्यों रखते हैं?

• दमक उठी दोनों की निर्मल हँसी से

गांधी जी के यह कहने पर कि शरारती लोगों को निंत्रण में रखने हेतु ही यह लाठी वह अपने पास रखते हैं, जवाहरलाल नेहरू हँस पड़ते हैं। बापू भी हँस पड़ते हैं। दोनों की निर्मल अर्थात् बच्चों की सी मासूम-पवित्र हँसी जिसमें कोई छल-कपट नहीं था, वातावरण में गूँज उठी।

पाठ्यपुस्तक का अभ्यास

पाठ-ज्ञान

- (क) गांधी जी के पास जवाहरलाल नेहरू गए थे।
- (ख) जवाहरलाल जी को रात में अँधेरा होने के कारण बापू की लाठी नहीं दिखी।
- (ग) जवाहरलाल जी ने गांधी जी से पूछा कि आप तो प्रेम और अहिंसा के पुजारी हैं, फिर ये लाठी क्यों रखी हुई है?
- (घ) गांधी जी ने जवाहरलाल नेहरू जी को उत्तर दिया कि उनके जैसे ऊधमी अर्थात् शरारती लोगों के लिए ही उन्होंने लाठी रखी हुई है।
- (ङ) गांधी जी का पूरा नाम है—मोहनदास करमचंद गांधी।

भाषा-ज्ञान

1. शब्दों के अर्थ जानकर बच्चे स्वयं छोटे व सरल वाक्य बनाएँगे।
2. छड़ी, घड़ी, लड़ी, चढ़ी, गढ़ी, खड़ी, पढ़ी, मढ़ी।
3. गुस्सा — क्रोध दीया — दीप
रात — निशा डंडा — लट्ठ
चश्मा — ऐनक तम — अँधेरा

4. व्यक्ति

व्यक्ति	वस्तु	भाव
गांधी	लाठी	अंधकार
जवाहरलाल नेहरू	कुटिया	निर्मल
	दीप	क्रोध
	हाथ	प्रेम-अहिंसा
	छड़ी	गुस्से में

लिखो

- कठिन शब्दों का अभ्यास करने से भाषा परिष्कृत होगी।

बताओ

बंदर, ऐनक, लाठी, टोपी, अचकन, घड़ी, चरखा

खेल-खेल में

- बच्चे अपनी कल्पना से तुकबंदी करेंगे; जैसे—
बापू जी के तीन बंदर नेहरू जी का गुलाब महकता
रहते थे कमरे के अंदर। अचकन पर उनकी है फबता।
बापू जी का चरखा चलता नेहरू जी की कलम में जादू
सूत कात कर कपड़ा बनता। वाणी पर भी उनका काबू।
अहिंसा के वे हैं पुजारी जब तक सूरज चाँद रहेगा
प्रेम से दुनिया है सँवारी तब तक नेहरू जी का नाम रहेगा।

अभ्यास-पुस्तिका

1. (क) थोड़े कुछ झल्लाकर बोले—‘आप तो प्रेम-अहिंसा के हामी हैं, फिर भला पाँच हाथ का इतना मोटा लट्ठ यह रहता है किसलिए बगल ही में डला?’
- (ख) गांधी जी मुस्करा उठे इस क्रोध पर बोले—‘तुम्हीं बताओ तुम से ऊधमी लड़कों की क्या आसपास मेरे कमी! उन्हें ठीक रख सकूँ, इसी के ध्यान से रखता हूँ मैं लंबी-मोटी यह छड़ी।’

2. रात × दिन अहिंसा × हिंसा
 अधियारा × उजियारा प्रेम × घृणा
 थोड़ा × बहुत मोटा × पतला
 लंबा × छोटा हँसना × रोना
3. जब = बज ताना = नाता नाम = मान
 जला = लाज रखी = खीर
4. (क) क्रोधी – क्रोधी व्यक्ति को कोई पसंद नहीं करता।
 (ख) ऊधम – बच्चे ऊधम मचाते हैं।
 (ग) हाथी – मुझे हाथी पर बैठकर घूमना अच्छा लगता है।
 (घ) कम – बच्चों को कम बोलना चाहिए।
 (ङ) रखी – पिता जी ने अपनी घड़ी उतारकर मेज़ पर रखी।
5. (क) जवाहरलाल जी लाठी से टकरा गए थे।
 (ख) 'अहिंसा' से तात्पर्य है—हिंसा न करना।
 (ग) गांधी जी ने लाठी रखने का कारण बताया कि उनके आसपास अनेक शरारती लड़के हैं। उन्हें ठीक रखने के लिए गांधी जी अपने पास लाठी रखते हैं।



7. अंधेर नगरी चौपट राजा

प्रतिपाद्य विषय :

'अंधेर नगरी चौपट राजा' एक प्रसिद्ध लोककथा है, जिसमें एक गुरु और उसके चेले मुख्य पात्र हैं। हिमालय की यात्रा के रास्ते में जब वे एक नगर में विश्राम के लिए रुकते हैं, तब उन्हें पता चलता है कि इस नगर में लोग रात को जागते हैं और सभी चीजें एक टके में मिलती हैं। गुरु ने इस अंधेर नगरी से चले जाना ही ठीक समझा। पर कल्लू वही रुक गया। अंधेर नगरी के राजा के सैनिकों ने कल्लू को फाँसी देने के लिए पकड़ लिया, क्योंकि फाँसी का फंदा बड़ा बन गया था। गुरु की समझदारी और सूझ-बूझ से राजा और उसके दरबारियों का खातमा हुआ। चेले को सबक मिल गया और गुरु-चेला दोनों नगर छोड़ कर चले गए।

मूलभाव :

गुरु के वचनों द्वारा यह बताना कि जहाँ प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध काम हो रहा हो और जहाँ का राजा ही चौपट हो, वहाँ ठहरना ठीक नहीं। जिस राज्य का राजा समझदार नहीं, उस राज्य की बरबादी निश्चित है। फाँसी की घटना के माध्यम से यह सिद्ध भी हो जाता है। गुरु की दूरदर्शिता और अनुभव का लाभ उठाना ही शिष्यों के हित में होता है।

जीवन-मूल्य और दृष्टिकोण :

गुरु के वचनों का सदैव पालन करना, सूझ-बूझ से संकट के समय हल खोजना, शारीरिक परिश्रम का महत्व, किसी भी चीज़ की अति नुकसानदायक।

भाषागत योग्यताएँ और कौशल :

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों की पहचान, नए-नए शब्दों को बनाना, रचनात्मक कार्य, संयुक्ताक्षरों का ज्ञान, उपसर्ग-प्रत्यय, विराम-चिह्नों की पहचान तथा युग्म शब्दों का प्रयोग।

काव्य-पंक्तियों का सरलार्थ :

- यह तो अंधेर नगरी है। यहाँ का राजा ही चौपट है।

कल्लू के इस बात पर खुश होने पर कि यहाँ तो मजे-ही-मजे हैं, क्योंकि हर चीज़ टके में मिलती है, गुरु ने समझाते हुए कहा कि यह तो अंधेर नगरी है अर्थात् यहाँ सब उलटा ही होता है, जो राज्य के लिए हितकर नहीं और जहाँ का राजा ही समझदार न हो वहाँ कभी भी कुछ भी गलत घट सकता है।

पाठ्यपुस्तक का अभ्यास

पाठ-ज्ञान

1. (क) पिता जी रोज़ दरबार जाया करते थे।
 (ख) गुरु जी अपने चेलों को तपस्या के लिए हिमालय लेजा रहे थे।
 (ग) चेले को नगर अजीब-सा लगा, क्योंकि दिन का समय था, फिर भी चारों ओर सन्नाटा था, सारे बाज़ार, चौक, गलियाँ और रास्ते खाली पड़े थे और दूर-दूर तक कोई आदमी नज़र नहीं आ रहा था।

(घ) गुरु ने नगर के राजा को चौपट इसलिए कहा, क्योंकि वहाँ हर चीज़ एक टके में मिलती थी, चाहे वह चाँदी का कंगन हो या पूरी-भाजी।

(ङ) गुरु ने चेले को बचाने के लिए सैनिकों से यह कहा कि यह शुभ मुहूर्त है। इस समय मरने वाला अगले जन्म में राजा बनेगा। गुरु की बात सुनकर राजा के मन में लालच आ गया। पहले राजा फाँसी पर चढ़ा फिर उसके दरबारी। इस प्रकार से गुरु ने चेले को बचा लिया।

2. (क) चेले ने राजा से कहा।

(ख) गुरु ने चेले से कहा।

(ग) चेले ने गुरु से कहा।

(घ) राजा ने सैनिकों, गुरु-चेले व सभी एकत्रित लोगों से कहा।

भाषा-ज्ञान

1. (क) मोहन गेंद की ओर भागा।

मोहन डोसा और समोसा खाता है।

(ख) मोहन बाहर की ओर भाग गया।

मोहन के आँगन में बहार आ गई।

(ग) मोहन ने बाज़ार से कुछ सामान खरीदा।

मोहन और सोहन दिखने में एक समान लगते हैं।

(घ) मोहन ने गुलदस्ते में फूल सजा दिए।

मोहन को मास्टर जी ने सजा दी।

2.

		दे	व	ता
		व		
स	सु	र		
म्रा	ता			
ज़ी				

3. (क) स्वयं	तुम्हें	चूल्हा
स्वाति	तुम्हारा	दूल्हा
(ख) सन्नाटा	कल्लू	विपत्ति
प्रसन्न	पल्ला	पत्ता

लिखो

- कठिन शब्दों के अभ्यास से शुद्ध वर्तनी संबंधी ज्ञान बढ़ेगा।

बताओ

लस्सी	गरमी	बादाम	सरदी
काजू	सरदी	शिकंजी	गरमी
खजूर	सरदी	गुड़	सरदी

खेल-खेल में

- अधूरे चित्र पूरे करने और उनमें रंग भरने से राष्ट्रीय ध्वज व पशु-पक्षियों के संबंध में जानकारी बढ़ेगी।

अभ्यास-पुस्तिका

- बच्चे स्वयं करेंगे।
- (क) दरबार (ख) तपस्या (ग) एक टके
(घ) सैनिक (ङ) राजा
- गुरु × चेला/शिष्य उठना × बैठना
अँधेरा × उजाला मोटा × पतला
चढ़ना × उतरना सोना × जागना
- (क) हाँफते-हाँफते बच्चे ने अपने पिता को देर से आने का कारण बताया।
(ख) सब लोग सोने का हार ढूँढते-ढूँढते थक गए।
(ग) देर होने के कारण वह दौड़ता-दौड़ता स्कूल पहुँचा।
(घ) लोहड़ी के कारण गली-गली में चहल-पहल थी।
- गुरु — चेला
पूरी — भाजी

उलटा – पुलटा
सोते – जागते
चाँद – सितारे
धक्का – मुक्की

6. दरबार अचकन
राजा आदमी
बादाम चेला
हिमालय रबड़ी
अंधेर नगरी जल्लाद

7. अगर मैं किसी ऐसी नगरी में पहुँचता, तो मैं वहाँ के लोगों को समझाता कि वे अपने विवेक से काम लें। कभी भी बिना सोचे-समझे किसी की बात पर विश्वास न करें।

(बच्चों द्वारा दिए गए उत्तर भी सही माने जाएँगे।)

8. (क) जा रहे थे। (ख) दिखाई दिया (ग) सोते हैं।
(घ) सुनाई (ङ) सोचा



8. अप्सरा का तोता

प्रतिपाद्य विषय :

इंद्र के दरबार की अप्सरा का प्यारा तोता एक दिन अचानक उड़कर धरती पर चला जाता है, इससे अप्सरा बहुत विचलित हो जाती है। वह स्वयं धरती पर जाकर देखती है कि कहीं खेतों में किसान काम कर रहे हैं, कहीं लड़कियाँ कुएँ से पानी भर रही हैं, कहीं मजदूर सड़क बना रहे हैं। आराम के समय लोग नाच-गा भी रहे हैं। तोते से पूछने पर कि उसके लिए चार-चार नौकर रखे थे, फिर भी वह अप्सरा को क्यों छोड़ आया? तोता उत्तर देता है कि यदि मैं तुम्हें इतना ही प्यारा था, तो तुमने मेरा काम अपने हाथों से क्यों नहीं किया? मेरे मन को तो वही लोग अच्छे लगते हैं, जो काम करते हैं और आराम के समय नाचते-गाते भी हैं। ऐसा कहकर तोता उड़ जाता है और अप्सरा अकेली रह जाती है।

मूलभाव :

‘अप्सरा का तोता’ कविता में तोता अप्सरा को इस बात का अहसास दिलाता है कि उसी का जीवन सफल है जो कर्म करता है। मनोरंजन और कर्म का संतुलन ही व्यक्ति के जीवन को आनंदमय बनाता है। अतः कर्म ही जीवन है।

जीवन-मूल्य और दृष्टिकोण :

कर्म करने वालों को सभी पसंद करते हैं। कर्मनिष्ठ बनने की प्रेरणा देना, सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना जागृत करना, कर्तव्य-परायणता, लगन से कार्य करने की प्रेरणा देना आदि।

भाषागत योग्यताएँ और कौशल :

लिंग बदलो, विलोम शब्द, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का अभ्यास, उचित ताल-लय के साथ कविता का वाचन, भाव-ग्रहण, कंठस्थीकरण, स्मरण शक्ति का विकास।

काव्य-पंक्तियों का सरलार्थ :

- नाच करूँ और मन बहलाऊँ, मैं कैसे यह मेहनत करती?

इंद्र के यह पूछने पर कि क्या अप्सरा अपने हाथों से तोते को दाना खिलाती थी, पानी पिलाती थी—अप्सरा इस पर सफ़ाई देते हुए कहती है कि वह तो अप्सरा है, उसका काम है नाच-गाकर सबका मन बहलाना। मेहनत करना उसका काम नहीं। उसके पास इतने नौकर-चाकर हैं, फिर वह कोई काम क्यों करे?

- वे ही मेरे मन को भाएँ

तोते ने धरती पर आने का कारण बताते हुए अप्सरा से कहा कि धरती के लोग परिश्रमी हैं, पर साथ ही समयानुसार नाचते-गाते भी हैं। मनोरंजन के साथ-साथ अपने कर्तव्यों की पूर्ति भी करते हैं। उसे कर्मनिष्ठ-कर्तव्यशील व्यक्ति ही प्रिय हैं। अतः वह धरती पर इन्हीं लोगों के बीच रहना चाहता है।

पाठ्यपुस्तक का अभ्यास

पाठ-ज्ञान

- (क) अप्सरा अपने तोते को कहीं न पाकर घबरा उठी थी।
(ख) तोता अप्सरा से रुठकर इसीलिए चला गया क्योंकि अप्सरा उसका कोई भी काम स्वयं नहीं करती थी। वह न तो अपने हाथ से दाना खिलाती थी, न ही उसे पानी पिलाती थी। सभी कुछ नौकर ही करते थे।
(ग) राजा इंद्र ने अप्सरा को सलाह दी कि वह स्वयं धरती पर जाकर तसल्ली कर ले।
(घ) तोते को धरती के लोग पसंद थे, जो मेहनत करते थे और साथ ही नाचते-गाते भी थे।
- बच्चे स्वयं काव्य-पाठ पढ़कर पंक्तियों को पूरा करेंगे। इससे उनमें स्व-अध्ययन की आदत विकसित होगी।

भाषा-ज्ञान

1. (क) लिंग बदलो।	(ख) विलोम शब्द
नर्तक — नर्तकी	दुख × सुख
नौकर — नौकरानी	सुंदर × असुंदर
महाराज — महारानी	देव × दानव
नर — नारी	धरती × आकाश
राजा — रानी	लड़की × लड़का

- किसान, मजदूर, लकड़हारा, धोबी, मोची, बढ़ई।

लिखो

- कठिन शब्दों के अभ्यास से व्यावहारिक भाषा-ज्ञान व उच्चारण तथा वर्तनी घनिष्ठ संबंध को जानेंगे।

बताओ

- राजा ने अप्सरा से यह सवाल उसे यह अहसास दिलाने के लिए पूछा कि यदि आपको किसी की परवाह है, तो उसकी छोटी-छोटी बातों का भी स्वयं ध्यान रखना चाहिए।

- बच्चे स्वयं तोते की पसंद-नापसंद को ध्यान में रखते हुए गोला लगाएँगे।

खेल-खेल में

- बच्चे अपनी रुचि व कल्पना के अनुसार पालतू जानवरों को नाम देंगे जिनसे उनमें निर्णय लेने की क्षमता का विकास होगा।

अभ्यास-पुस्तिका

- घबराय — बतलाय सारा — प्यारा
बात — रात प्यारा — हमारा
राज — काज दाना — गाना
आऊँगा — जाऊँगा गाएँ — भाएँ
- (क) इंद्र ने अप्सरा से कहा।
(ख) अप्सरा ने इंद्र से कहा।
(ग) इंद्र ने अप्सरा से कहा।
(घ) अप्सरा ने तोते से कहा।
(ङ) तोते ने अप्सरा से कहा।
- (क) इंद्र, (ख) अप्सरा,
(ग) तोता, (घ) किसान,
(ङ) लड़कियाँ, (च) लकड़हारे।
- बच्चे स्वयं करेंगे जिससे उनकी भावाभिव्यक्ति की क्षमता का विकास होगा।
- घबराय — घबराना
बतलाय — बतलाना
आवे — आना
काज — कार्य
- (क) तोता,
(ख) कुत्ता,
(ग) बिल्ली।

9. मीतू की प्रतिज्ञा

प्रतिपाद्य विषय :

मीतू को दादा जी का बेसब्री से इंतजार है, क्योंकि दादा जी बहुत अच्छी कहानियाँ सुनाते हैं। दादा जी गाँव से हरी सब्जियाँ लेकर आते हैं, परंतु शहरों की गरमी और प्रदूषण से उनकी तबीयत बिगड़ जाती है। मीतू को दादा जी से ही पता चलता है कि गाड़ियों के धुएँ, हॉर्न बजाने, थैलियों और प्लास्टिक को जलाने से तथा पेड़ों को काटने से प्रदूषण होता है। प्रदूषण की भयावह स्थिति को जानकर मीतू प्रतिज्ञा करती है कि वह अपने प्रत्येक जन्मदिन पर एक पेड़ लगाया करेगी।

मूलभाव :

‘मीतू की प्रतिज्ञा’ नामक एकांकी में प्रदूषण, उसके कारणों तथा परिणामों की जानकारी देते हुए जागरूकता लाने का संदेश दिया गया है। पेड़ों के काटने के दुष्परिणामों को भी प्रतिपादित किया गया है।

जीवन-मूल्य और दृष्टिकोण :

वातावरण के प्रति सजगता जागृत करना एवं पेड़-पौधों के महत्त्व को बताना, प्रकृति से प्रेम तथा कम वाहन प्रयोग का आग्रह।

भाषागत योग्यताएँ और कौशल :

संयुक्त व्यंजन का प्रयोग, समानार्थक शब्द, कठिन शब्दाभ्यास, विस्तृत विवरण, पारिभाषिक शब्द, सही-गलत का निर्णय, तर्क, निष्कर्ष निकालना, चिंतनात्मक पठन व संवाद-योजना की जानकारी।

पाठ्यपुस्तक का अभ्यास

पाठ-ज्ञान

1. (क) मीतू अपने दादा जी का इंतजार कर रही थी।
(ख) मीतू के दादा जी गरमी और बसों तथा गाड़ियों के धुएँ से परेशान थे।
(ग) धुएँ के फैलने से तथा गंदगी के कारण वातावरण दूषित हो जाता है, उसे प्रदूषण कहते हैं।

(घ) थैलियों और प्लास्टिक को जलाने से तथा पेड़ों को काटने से प्रदूषण होता है।

2. (क) गाँव, (ख) कहानियाँ, (ग) प्रदूषण,
(घ) पेड़, (ङ) जन्मदिन।

भाषा-ज्ञान

1. च् + छ = च्छ — अच्छा स्वच्छ
न् + म = न्म — जन्म आजन्म
प् + ल = प्ल — प्लास्टिक सप्लाई
प् + य = प्य — प्यास प्यार
क् + य = क्य — क्या क्यारी
2. पानी — जल पेड़ — वृक्ष
बेटा — सुत माँ — जननी
स्वच्छ — साफ़ पिता — जनक
हवा — वायु लड़की — कन्या
3. ‘ज’ तथा ‘ज्ञ’ के लेखन व उच्चारण से भाषा-ज्ञान में वृद्धि होगी।

लिखो

- कठिन शब्दों के अभ्यास से भाषा-ज्ञान में वृद्धि होगी।

बताओ

- बच्चे स्वयं पेड़ लगाने की क्रिया-प्रक्रिया के विषय में कक्षा में जानकारी देंगे।

खेल-खेल में

- बच्चे स्वयं सही-गलत का निशान लगाएँगे, जिनसे ज्ञान-वृद्धि व आस-पास के वातावरण के प्रति सजगता जागेगी।

अभ्यास-पुस्तिका

1. बच्चे शब्दों का अभ्यास स्वयं करेंगे।
2. धुआँ, हूँ, गाँव, लगाऊँगी, तालियाँ।

3. थैला – थैले बस – बसें
कहानी – कहानियाँ धुआँ – धुएँ
गाड़ी – गाड़ियाँ ताली – तालियाँ
सब्जी – सब्जियाँ बच्चा – बच्चे

4. दादा – दादी बच्चा – बच्ची
बेटा – बेटी पोता – पोती
पापा – मम्मी लड़का – लड़की

नोट – शिक्षक/शिक्षिका चित्र पर बच्चों से गोला लगवाएँ।

5. बैलगाड़ी रिक्षा घोड़ागाड़ी
6. (क) ×, (ख) ×, (ग) √, (घ) √।
7. (क) हमें दीवाली पर पटाखे नहीं जलाने चाहिए, क्योंकि इससे वातावरण दूषित होता है।
(ख) हमें तेज़ आवाज़ में गाने नहीं सुनने चाहिए, क्योंकि इससे कान बहरे हो जाते हैं और ध्वनि प्रदूषण होता है।
(ग) हमें नदी किनारे कपड़े नहीं धोने चाहिए, क्योंकि इससे जल प्रदूषित होता है।
(घ) हमें पेड़ों की देखभाल करनी चाहिए, क्योंकि पेड़ हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। पेड़ अशुद्ध वायु को शुद्ध करते हैं।

8. गाँव का जीवन	शहर का जीवन
(i) झोपड़ियाँ होती हैं।	(i) बड़ी-बड़ी इमारतें।
(ii) बैलगाड़ी आने-जाने का साधन।	(ii) मोटर कार, बस आने-जाने का साधन।
(iii) कच्चा रास्ता।	(iii) पक्की सड़कें।
(iv) साधारण जीवन।	(iv) आधुनिक उपकरण।
(v) खुला वातावरण।	(v) व्यस्त जीवन।

9. (i) पेड़ों से फल मिलते हैं।
(ii) पेड़ों से कई प्रकार की दवाइयाँ बनाने के लिए फल-फूल मिलते हैं।

- (iii) पेड़ वायु को शुद्ध करते हैं।
(iv) पेड़ों से छाया मिलती है।
(v) पेड़ों की लकड़ी से फर्नीचर बनता है।
(vi) पेड़ों की लकड़ी ईंधन के काम आती है।
(vii) पेड़ ताज़ी हवा देते हैं।
(viii) पेड़ों से कागज़ बनता है।



10. पाठशाला

प्रतिपाद्य विषय :

‘पाठशाला’ पाठ में स्वामी विवेकानंद जी के छात्र जीवन की घटना का कथात्मक वर्णन किया गया है। भूगोल की कक्षा में अध्यापक वेणुगोपाल जी छात्रों की कॉपियाँ जाँच रहे थे। नरेंद्र की कॉपी में संयुक्तराज्य अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन पढ़कर अध्यापक गुस्से में आ गए। अध्यापक के बार-बार कहने पर भी नरेंद्र ने अपना उत्तर नहीं बदला, क्योंकि उन्हें पता था कि वह सही है। सत्य पर उनका दृढ़-विश्वास और अपनी गलती का अहसास होने पर अध्यापक ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि यही सत्य उनकी सबसे बड़ी शक्ति बनेगा। नरेंद्र ही आगे चलकर स्वामी विवेकानंद के नाम से प्रसिद्ध हुए।

मूलभाव :

‘पाठशाला’ नामक प्रेरक-प्रसंग में स्वामी विवेकानंद जी के छात्र-जीवन की एक सामान्य-सी घटना के माध्यम से सत्य की अटूट शक्ति व तर्क शक्ति के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है।

जीवन-मूल्य और दृष्टिकोण :

सत्य पर अटल विश्वास और तर्क शक्ति के बल पर ही व्यक्ति सफल होता है। स्वामी विवेकानंद जी के जीवन से परिचित कराना। आत्मविश्वास, व्यापक सोच व असफलताओं को चुनौती मानना जैसे गुणों का विकास।

भाषागत योग्यताएँ और कौशल :

कारक-चिह्नों (परसर्ग) का प्रयोग, ओर तथा और में अंतर, मुहावरों की जानकारी, संदेश, चरित्र-चित्रण व 'र' के विभिन्न रूप।

कठिन पंक्तियों का सरलार्थ :

- न तो वेणुगोपाल जी के मन में कोई अपराध भाव रहा, न नरेंद्र के मन में अपने गुरु जी के प्रति रोष।

अध्यापक वेणुगोपाल जी को जब अपनी गलती का अहसास हुआ, तब उन्होंने विवेकानंद जी की सत्य पर अटूट दृढ़ता की प्रशंसा की। उस समय उनके मन में अपने शिष्य के प्रति न तो गुस्सा था और न ही कोई वैर भाव, अपितु गर्व का भाव था। अध्यापक की प्रतिक्रिया और मुक्त कंठ से की गई प्रशंसा सुनकर नरेंद्र के मन में भी अध्यापक के प्रति आदर भाव ही जागा। मार खाने का अपमान अब उनके मन में नहीं रहा।

पाठ्यपुस्तक का अभ्यास

पाठ-ज्ञान

1. (क) संगीत मास्टर जी से डाँट खाने के कारण आज सारे बच्चे चुप थे।
(ख) गणेश की गाय का बछड़ा एकदम उजला व सफ़ेद था।
(ग) जो बच्चे कॉपी नहीं लाए थे, उन्हें अध्यापक वेणुगोपाल जी ने मुर्गा बना दिया था।
(घ) नरेंद्र की कॉपी देखकर वेणुगोपाल जी ने पूछा कि संयुक्त राज्य अमेरिका की राजधानी कौन-सी है?
(ङ) वेणुगोपाल जी को अंत में इस बात की खुशी हुई कि इतनी डाँट और मार खाने पर भी नरेंद्र सत्य पर टिके रहे और इसी दृढ़ता के कारण अध्यापक की भूल में भी सुधार हुआ।
2. (क) के, (ख) को, (ग) ने, (घ) की,
(ङ) में, (च) पर, (छ) का।

भाषा-ज्ञान

1. (क) मोहन और सोहन पढ़ रहे हैं।

- (ख) पढ़ने के बाद वे घर की ओर जा रहे हैं।
(ग) वे घर जाकर खाना खाते हैं और सो जाते हैं।
(घ) सुबह उठकर वे बगीचे की ओर जाते हैं।

2. 'आग' शब्द से संबंधित मुहावरों का प्रयोग—

- (क) आज तो आग बरस रही है।
(ख) रामू की करतूत सुनते ही उसके तन-बदन में आग लग गई।
(ग) उसकी आँखों से अंगारे बरसने लगे।

3. 'रु' और 'रू' के विभिन्न प्रयोग पढ़कर बच्चे उसके अंतर को समझ सकेंगे।

लिखो

- कठिन शब्दों के अभ्यास से भाषा-ज्ञान में वृद्धि होगी।

बताओ

- सही व गलत का निशान लगाने से पूर्व बच्चे अपने स्वभाव व गुण-दोषों का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
- बच्चे अपने दैनिक अनुभवों को शब्दबद्ध करना सीखेंगे।

खेल-खेल में

- गिल्ली-डंडा, बैट-बॉल, पिट्ठू, फुटबॉल, गुलेल, लूडो।

अभ्यास-पुस्तिका

1. छात्र स्वयं करेंगे।
2. देश — संयुक्त राज्य अमेरिका, भारत।
राज्य — वाशिंगटन, न्यूयार्क।
3. वेणुगोपाल, गणेश, विशू, नरेंद्रनाथ दत्त, विवेकानंद।
4. कॉपी — कॉपियाँ घड़ी — घड़ियाँ
लड़का — लड़के पुस्तक — पुस्तकें
मुर्गा — मुर्गे पन्ना — पन्ने
5. जन्म × मरण विश्वास × अविश्वास गलत × सही
सुबह × शाम आगे × पीछे सत्य × असत्य
प्रश्न × उत्तर हँसना × रोना

6. (क) स्वामी विवेकानंद का जन्म 22 जनवरी, 1863 को हुआ था।
 (ख) उनके गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस थे।
 (ग) उन्होंने वेदों का प्रचार किया।
 (घ) उन्होंने धर्म के सही स्वरूप का प्रचार किया।
 (ङ) उनका सत्य पर अटल विश्वास था।
7. (क) दिमाग ठीक करना, (ख) क्रोध करना।
8. स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद,
 संत कबीर, गुरु नानक देव।



11. गोबर बादशाह

प्रतिपाद्य विषय :

मनो दीदी का लड़का गंदा पानी पीने से बीमार हो गया। वैद्य जी की दवाई से भी कुछ फ़ायदा नहीं हुआ। एक दिन मज़ाक-ही-मज़ाक में बुधिया ने मनो दीदी को कह दिया कि सामने जो पेड़ के नीचे गोबर पड़ा है, वह गोबर देवता हैं। माथा टेककर मनौती माँग लो। गाँव में एक डॉक्टर भी आया हुआ था। डॉक्टर की दवा से लड़का ठीक हो गया, पर सभी ने इसे गोबर देवता की कृपा ही समझा। धीरे-धीरे वह स्थान गोबर देवता का डेरा बन गया। चढ़ावा चढ़ने लगा और उस स्थान की ख्याति दूर-दूर तक फैलने लगी।

मूलभाव :

‘गोबर देवता’ की लोक कहानी के माध्यम से गाँव के लोगों में फैले अंध विश्वास की ओर लेखक ने संकेत किया है। कुछ लोगों के मन की मुराद पूरी हो जाती, कुछ लोग डॉक्टर व वैद्य जी की दवा से ठीक हो जाते, पर वे इसे गोबर देवता की कृपा ही समझते हैं।

जीवन-मूल्य और दृष्टिकोण :

ग्रामीण संस्कृति से परिचय, चिकित्सा पद्धति पर प्रकाश, ग्रामीण रीति-रिवाजों, रूढ़ियों व अंधविश्वासों की जानकारी देना।

भाषागत योग्यताएँ और कौशल :

प्रश्नोत्तर का अभ्यास, रिक्त स्थान, ‘ड़’, ‘ढ़’, ‘ड’, ‘ढ’ की जानकारी, विलोम शब्द, पर्यायवाची शब्द, प्राचीन व नवीन रूप में वर्तनी, कठिन शब्दाभ्यास, संयुक्त व्यंजन, उर्दू शब्द आदि।

कठिन पंक्तियों का सरलार्थ :

- असली बादशाह तो यह है।

जब गोबर देवता का पक्का चबूतरा बन गया तब वहाँ पर लोगों का मेला-सा लग गया। गोबर देवता को ढूँढ़ निकालने का श्रेय लोग मनो दीदी के लड़के को देते, क्योंकि सबसे पहले वही गोबर देवता से मनौती माँगने पर ठीक हुआ था। उससे पहले गोबर देवता के महात्म्य की जानकारी किसी को नहीं थी। इसलिए लोग लड़के को देखकर उसे असली बादशाह कहते।

पाठ्यपुस्तक का अभ्यास

पाठ-ज्ञान

1. (क) मनो दीदी का लड़का गंदा पानी पीने से बीमार हो गया था, इसलिए वह उसे वैद्य जी के पास ले गई थी।
 (ख) बुधिया ने मनो दीदी को यह सलाह दी कि पास के पीपल के पेड़ के नीचे बिखरे गोबर को देवता मानकर, माथा टेककर मनौती माँगने से तुम्हारा लड़का ठीक हो जाएगा।
 (ग) लड़के की बीमारी ठीक होने की खुशी में मनो दीदी ने गोबर के आसपास पक्का चबूतरा बनवा दिया।
 (घ) असली बादशाह तो मनो दीदी का लड़का था, जिसके कारण लोगों को गोबर देवता के महात्म्य के बारे में पता चला।
2. (क) मनो दीदी, (ख) बुधिया, (ग) गायों, (घ) चबूतरा, (ङ) मनगढ़ंत, (च) श्रद्धा से।

भाषा-ज्ञान

1. ङ	— लड़का	कड़वा	भेड़िया
ढ़	— पढ़ना	चढ़ना	गढ़ना

ड - डाली	डलिया	डमरू
ढ - ढेर	ढीला	ढोलक
2. छोटा - बड़ा	पक्का - कच्चा	गंदा - साफ़
खुशी - गम/उदासी	ठीक - गलत	पुराना - नया
3. वैद्य/वैद्य	श्रद्धा/श्रद्धा	उत्तर/उत्तर
चिह्न/चिह्न	हड्डियाँ/हड्डियाँ	प्रसिद्ध/प्रसिद्ध

लिखो

- कठिन शब्दों के अभ्यास से वर्तनी संबंधी अशुद्धियों में सुधार होगा।

बताओ

- डायरिया, पीलिया, आंत्रशोध, पेचिश जैसी बीमारियाँ हो जाती हैं।
 - बच्चे स्वयं अपनी-अपनी चिकित्सा-पद्धति के बारे में बताएँगे।
 - पानी - जल, नीरा।
 - (क) क्लोरीन की गोली डालकर
 - (ख) फिल्टर के प्रयोग द्वारा
 - (ग) पानी को उबाल कर
- (नोट : शिक्षक/शिक्षिका पानी साफ़ करने के दो उपाय बच्चों को लिखवाएँ। यहाँ समझाने के लिए तीन प्रकार दिए गए हैं।)
- पीने के, आटा, कपड़े, पौधे।

खेल-खेल में

- बच्चे स्वयं वर्ग पहली हल करेंगे जिससे उनका बौद्धिक विकास होगा।

ऊपर से नीचे

- | | | | |
|-------------|------------|----------|-----------|
| 1. दवाई | 7. मलेरिया | 2. रोगी | 8. पोलियो |
| 3. चिकित्सा | 10. डॉक्टर | 4. वार्ड | 9. बीमारी |
| 5. अस्पताल | 11. बुखार | 6. सूई | |

बाएँ से दाएँ

अभ्यास-पुस्तिका

- (क) गंदा पानी पीने से लड़के बीमार पड़ गए।
(ख) मैदान में पीपल के पेड़ थे।

(ग) लोग देवताओं को पूजते थे।

(घ) गाँव से अनेक साधु जा रहे थे।

- (क) लेकर आई, (ख) मिला, (ग) चली जाती,
(घ) ठीक हो गया, (ङ) बनवा दिया।
- बादशाह - बेगम काका - काकी देवता - देवी
औरत - आदमी लड़का - लड़की बेटी - बेटा
- (क) क्या? तुम्हारा लड़का ठीक है?
(ख) हाँ, मेरा बेटा ठीक है।
(ग) अच्छा, यह तो बहुत खुशी की बात है।
(घ) उसे देवी-देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त है।
- भगवान से प्रार्थना करती हैं।
 - डॉक्टर से दवाई लाकर देती हैं।
 - बार-बार हमारी तबीयत के बारे में पूछती हैं।
 - डॉक्टर द्वारा बताई गई खाने की चीज़ें बनाकर देती हैं।
- (क) सब्जीवाला, (ख) फलवाला, (ग) टोपीवाला,
(घ) दूधवाला, (ङ) खिलौनेवाला।
- बनवाकर = बन, बनवा, वाकर, करवा, बक, कर, नवा
अकसर = असर, कसर, रस, सर
बादशाह = बाद, शाह, दश, हद
- (क) की, (ख) कि, (ग) कि, (घ) की, (ङ) कि।
- (क) ×, (ख) √, (ग) √, (घ) ×, (ङ) ×।



12. पोंगल

प्रतिपाद्य विषय :

पोंगल के त्योहार पर घर के सभी बच्चे उत्साहित हैं। पहले दिन अर्थात् 'भोगी पोंगल' पर सभी इंद्र देवता की पूजा हेतु नदी किनारे जाते हैं, फिर नए कपड़े पहनकर घर के फालतू सामानों को इकट्ठा कर, आग जलाकर उसके चारों ओर घेरा बनाकर नृत्य करते हैं। दूसरे दिन 'सूर्य पोंगल' पर सूर्य की पूजा का महत्त्व दादा जी सभी बच्चों को बताते हैं। बच्चों के और अधिक पूछने पर दादा जी बताते हैं कि तीसरे दिन 'मट्टू पोंगल'

पर पशु-पूजा के बारे में बताते हैं कि इसमें सभी पशुओं को सजाया जाता है। जालीकट्टु एक प्रकार की प्रतियोगिता है, जिसमें बैल के सींग पर पड़ी रुपयों की माला को जीतने वाला युवक गाँव का 'हीरो' कहलाता है।

मूलभाव :

तमिलनाडु राज्य में मनाया जाने वाला त्योहार 'पोंगल' वहाँ का मुख्य त्योहार है। इसे मनाने की विधि, महत्त्व, प्रकृति व दैनिक जीवन से इसका संबंध तथा जालीकट्टु जैसी प्रसिद्ध प्रतियोगिता के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई है। कृषि-प्रधान संस्कृति का भी परिचय यहाँ मिलता है।

जीवन-मूल्य और दृष्टिकोण :

त्योहारों के महत्त्व को दर्शाना, भाई-चारे की भावना, कृषि प्रधान संस्कृति का परिचय, धार्मिक निरपेक्षता समभाव, प्रेम-सौहार्द व सामूहिक रूप से त्योहार मनाने का संदेश देना।

भाषागत योग्यताएँ और कौशल :

समानार्थक शब्द, धार्मिक त्योहार से संबंधित शब्दावली का परिचय, सही अंश चुनना, विराम-चिह्न की जानकारी, धार्मिक व राष्ट्रीय त्योहार की तिथि।

कठिन पंक्तियों का सरलार्थ :

- पशु ही तो हमारे जीवन के आधार हैं।

बच्चों के यह पूछने पर कि पोंगल के तीसरे दिन पशुओं की पूजा क्यों होती है, दादा जी ने उत्तर दिया कि पशुओं से ही हमारा जीवन है। पशुओं के बिना फसल की कल्पना ही नहीं की जा सकती। बैल ही खेतों में मिट्टी की खुदाई करते हैं, उन्हें जोतते हैं। बैलगाड़ी के द्वारा ही फसल मंडी तक पहुँचाई जाती है। गाय न होती तो दूध, दही और मक्खन कहाँ से आता? अतः पशु ही ग्रामीण संस्कृति का आधार हैं।

पाठ्यपुस्तक का अभ्यास

पाठ-ज्ञान

- (क) रमैय्या ने नए कपड़े पहने थे, क्योंकि पोंगल का त्योहार था।
- (ख) बच्चे दादा जी के साथ नदी किनारे इंद्र देवता की पूजा करने गए थे।

- (ग) इस कहानी में 'पोंगल' त्योहार की बात हो रही है।
- (घ) पोंगल के पहले दिन इंद्र देवता की पूजा की जाती है, क्योंकि इंद्र देवता वर्षा के देवता हैं। खेतों में फसल वर्षा के बिना नहीं उगाई जा सकती।
- (ङ) पोंगल के तीसरे दिन 'पशु-पूजा' इसलिए की जाती है, क्योंकि पशु ही हमारे जीवन का आधार है। पशुओं के बिना न तो फसल पैदा की जा सकती है, न दूध-दही व मक्खन ही मिल सकता है।
- (च) अंत में लेखक को इस बात का अफ़सोस हुआ कि यदि उसके चाचा जी आ गए होते, तो वे जालीकट्टु की प्रतियोगिता जरूर जीत जाते।

2. बच्चे स्वयं कहानी पढ़कर पूछे गए अंशों का मिलान करेंगे।

भाषा-ज्ञान

1. सुबह	— प्रातःकाल	देवता	— ईश्वर	सूरज	— सूर्य
वर्षा	— बारिश	कपड़ा	— वस्त्र	माँ	— जननी
दिन	— दिवस	मित्र	— दोस्त	फूल	— पुष्प
बेटा	— सुत				

2. विराम-चिह्न

- (क) आज गाँव में हलचल मची हुई है।
- (ख) माँ चावल, दूध और मक्खन से खीर तैयार करेंगी।
- (ग) क्या मैं भी जालीकट्टु में भाग ले सकता हूँ?
- (घ) पक्षी दाना चुग रहा है।
- (ङ) आसमान में बिजली चमकी, बादल गरजे और वर्षा होने लगी।
- (च) आप किससे मिलना चाहते हैं?

3. बच्चे स्वयं पढ़कर याद करेंगे।

लिखो

- कठिन शब्दों के अभ्यास से भाषा-ज्ञान में वृद्धि होगी।

बताओ

- ईद — सेवइयाँ।

होली – गुज़िया, जलेबी।

क्रिसमस – केक, पेस्ट्री, बिस्कुट, चॉकलेट।

- बच्चे स्वयं जानेंगे।
- त्योहार मनाए जाते हैं :
 - नीरस जीवन में सरसता लाने के लिए
 - आपसी भाईचारे, सौहार्द तथा प्रेम-भावना को बढ़ावा देने हेतु।
 - धार्मिक विश्वास हेतु।
 - रीति-रिवाजों व परंपरा के निर्वाह हेतु।
 - प्रकृति-प्रेम (ऋतु विशेष) तथा सामाजिक संबंधों हेतु।

खेल-खेल में

- सूर्य – गरमी, प्रकाश।
- नदी – पानी, जीव-जंतु, वर्षा।
- पेड़ – फल, लकड़ी, दवाइयाँ।

अभ्यास-पुस्तिका

- (क) तमिलनाडु में, (ख) भोगी पोंगल, (ग) भगवान इंद्र की, (घ) सूर्य पोंगल, (ङ) सूर्य देवता की, (च) मट्टू पोंगल, (छ) पशुओं की।
- (क) गुच्छा, (ख) गुच्छा, (ग) गोला, (घ) डिबिया, (ङ) समूह, (च) भीड़।
- (क) लक्ष्मी, (ख) सरस्वती, (ग) वरुण (घ) अग्निदेव।
- (क) दीवाली, (ख) होली, (ग) क्रिसमस, (घ) बाल-दिवस, (ङ) जन्माष्टमी।
- कच्चे – पक्के जीव – जंतु नहा – धोकर
थका – हारा उछल – कूद बड़े – बूढ़े
धक्का – मुक्की बच्चे – जवान
- (क) बच्चा पिता जी के पीछे-पीछे चल रहा है।
(ख) एक ही बात सुनते-सुनते मेरे कान पक गए।
(ग) अपनी धुन में सोचता-सोचता वह बहुत दूर निकल गया।
(घ) वह चलते-चलते थक गया।
(ङ) जोकर को देखकर बच्चे हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए।

7. बफ़ी, खीर, रबड़ी, रस-मलाई, कुल्फ़ी।



13. उधार की हवा

प्रतिपाद्य विषय :

कंचनपुर गाँव के राजा राजसेन पेड़ों को काटने के कारण स्वच्छ हवा के अभाव में बीमार पड़ गए। एक ऋषि ने उन्हें स्वच्छ हवा व पानी उधार के रूप में देकर पुनः स्वस्थ कर दिया। स्वस्थ होने पर राजा ने जिन-जिन स्थानों पर पेड़ कटवाये थे वहाँ पुनः पौधे लगवाए और तीन वर्षों तक उनकी देखभाल की, जब तक वे पुनः पेड़ न बन गए। इस प्रकार राजा को पेड़ों और प्रकृति के विभिन्न उपादानों के महत्त्व की शिक्षा मिली।

मूलभाव :

राजा राजसेन के शिकार की कहानी के माध्यम से पेड़ों व प्रकृति के विभिन्न उपादानों के महत्त्व, संरक्षण व प्रकृति-मानव के संबंधों पर प्रकाश डाला गया है। पेड़ों से हमें स्वच्छ हवा तथा नदी से स्वच्छ जल मिलता है और हवा व जल जीवन के आधार हैं। अतः प्रकृति का संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

जीवन-मूल्य और दृष्टिकोण :

वन संरक्षण को महत्त्व देना, प्रकृति से प्रेम, सौंदर्य-बोध, प्रकृति को नुकसान न पहुँचाने का संदेश, पेड़ लगाना, पर्यावरण का निर्माण, पर्यावरण-संरक्षण के उपायों से अवगत कराना तथा सामाजिक चेतना जागृत करना।

भाषागत योग्यताएँ और कौशल :

सही-गलत की पहचान, वचन, संयुक्त व्यंजन, वर्ण-विच्छेद व रचनात्मक कार्य।

पाठ्यपुस्तक का अभ्यास

पाठ-ज्ञान

- (क) राजा जंगल में शिकार खेलने गया था।

- (ख) राजा ने जंगल में रात गुजारने के लिए जगह साफ़ करने के लिए पेड़-पौधों को काटने के लिए कहा।
- (ग) जब राजा की तलवार एक पेड़ से टकराई तो पेड़ से आवाज़ आई कि वह पेड़ हवा का पेड़ है। उसे काटोगे तो हवा बंद हो जाएगी।
- (घ) पेड़ पर तलवार चलाने से पेड़ से धूल का बवंडर उठा तथा साथ ही आग का धुआँ भी निकलने लगा। आस-पास की हवा बंद हो गई, जिससे राजा के शरीर में फोड़े-फुँसी निकल आए और उनकी साँस रुकने लगी।
- (ङ) ऋषि ने राजा को बचाने के लिए एक शर्त रखी कि वह राजा को साफ़ हवा और पानी केवल उधार पर देगा, जिसे ठीक होने पर लौटाना होगा।
- (च) राजा ने ऋषि के आश्रम के सरोवर में स्नान किया और लंबी साँस लेकर पानी पिया, जिससे राजा स्वस्थ हो गया।
- (छ) ऋषि ने राजा और मंत्री को हवा लौटाने के लिए एक तरीका बताया, जिसके अनुसार राजा को एक वर्ष तक अपने राज्य में जहाँ-जहाँ पेड़ काटे गए हैं, वहाँ-वहाँ पौधे लगाने होंगे तथा तीन वर्षों तक उनकी देखभाल करनी होगी जिससे वह हवा देने वाले पेड़ बन जाएँ।

2. (क) ×, (ख) √, (ग) ×, (घ) ×, (ङ) √।

भाषा-ज्ञान

- | | | | | | | | | |
|--------|---|-----------|-------|---|---------|-----|---|-------|
| 1. एक | — | अनेक | पौधा | — | पौधे | रात | — | रातें |
| झाड़ी | — | झाड़ियाँ | तलवार | — | तलवारें | हवा | — | हवाएँ |
| फोड़ा | — | फोड़े | साँस | — | साँसें | | | |
| बाल्टी | — | बाल्टियाँ | वह | — | वे | | | |
2. क् + ष् = क्ष — क्षमा कक्षा रक्षा
 ज् + ज्ञ् = ज्ञ — ज्ञानी अज्ञान ज्ञात
 त् + र् = त्र — मंत्री मित्र पत्र
 श् + र् = श्र — आश्रम श्रम विश्राम
3. तलवार — त् + अ + ल् + अ + व् + आ + र् + अ

- साँस — स् + औ + स् + अ
 सरोवर — स् + अ + र् + ओ + व् + अ + र् + अ
 बाल्टी — ब् + आ + ल् + ट् + ई
 श्रीमान — श् + र् + ई + म् + आ + न् + अ

लिखो

- कठिन शब्दों के अभ्यास से मानक भाषा का अभ्यास होगा। बच्चे स्वयं करेंगे।

बताओ

- मैं अपने बरामदे में फूलों के पौधे मिट्टी के गमले में लगाऊँगी और प्लास्टिक की थैलियों का प्रयोग नहीं करूँगी। इस तरह से मैं प्रदूषण दूर करूँगी।
- पेड़ हमारे जीवन के आधार हैं। पेड़ों से हमें स्वच्छ हवा मिलती है। पेड़ों से हमें फल-फूल मिलते हैं, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं; जैसे-सेब, आम, अमरूद, चमेली आदि। फूलों से इत्र भी बनता है। पेड़ों से लकड़ी मिलती है जिससे कागज, दरवाजे खिड़कियाँ, पलंग, मेज़ आदि बनते हैं। पेड़ों से ही अनेक जड़ी-बूटियाँ मिलती हैं, जिससे दवाइयाँ बनती हैं।

खेल-खेल में

- बच्चे स्वयं प्रयोग करेंगे जिससे रचनात्मक कार्यों के प्रति रुचि का विकास होगा।

अभ्यास-पुस्तिका

- (क) शौक, (ख) पानी, (ग) आश्रम,
(घ) फोड़े-फुँसी, (ङ) हवा, (च) ओरा।
- कल, तब, याद, लेना, गाना, जाना, रेल, नीम, सेवा।
- जैसा — वैसा इन्हें — उन्हें हाँ — नहीं
लेना — देना यहाँ — वहाँ जितना — उतना।
- राजा ने मंत्री ने
ऋषि ने ऋषि ने

6. मार	मारो	मारोगे	हँस	हँसो	हँसोगे
बच	बचो	बचोगे	लिख	लिखो	लिखोगे
भाग	भागो	भागोगे	बोल	बोलो	बोलोगे

7. (i) अधिक-से-अधिक पेड़ लगाएँगे।
(ii) धुएँ के लिए ऊँची चिमनी का प्रयोग करेंगे।
(iii) वाहनों में सी०एन०जी० का प्रयोग करेंगे।
(iv) कूड़ा मिट्टी में दबाएँगे, जलाएँगे नहीं।
(v) कूड़े-कचरे के ढेर नहीं लगाएँगे।
(vi) पटाखों को नहीं जलाएँगे।



14. फूलों की घाटी

प्रतिपाद्य विषय :

‘फूलों की घाटी’ में संपूर्ण प्रकृति को एक ऐसी घाटी के रूप में चित्रित किया गया है जहाँ तरह-तरह के फूल अपनी सुषमा बिखेर रहे हैं। लगता है जैसे एक चित्रकार ने अपनी तूलिका से रंग-बिखेर दिए हों। कहीं केसर, मोतिया, गुलाब और चंपा खिल रहे हैं तो कहीं सरसों महक रही है। भिन्न-भिन्न फूल मानो कुछ कह रहे हों, उनकी भी अपनी भाषा है, वे भी संवेदनशील हैं। अतः उन्हें तोड़ना या किसी भी प्रकार का नुकसान पहुँचाना गलत है।

मूलभाव :

‘फूलों की घाटी’ जैसा कि नाम से ही प्रतीत होता है कि यह फूलों के रंग-बिरंगे संसार पर आधारित कविता है। फूलों को छूकर-उन्हें महसूस कर, उनकी सुंदरता, पवित्रता और कोमलता को सराहना ही सौंदर्यबोध है। उनका अपना अनूठा संसार है जिससे प्यार करने की ज़रूरत है, न कि उनके प्रति क्रूर बनने की। फूल है तो बहार है, बहार है तो प्रकृति है।

जीवन-मूल्य और दृष्टिकोण :

प्राकृतिक सौंदर्य को निहारना, फूलों के प्रति संवेदनशील होना, सौंदर्य-बोध, प्रकृति के वरदान से परिचित होना तथा प्रकृति का मानवीकरण।

भाषागत योग्यताएँ और कौशल :

अनुस्वार तथा अनुनासिक का प्रयोग, समान तुक वाले शब्दों का निर्माण, लय और ताल का समन्वय, विभिन्न फूलों के नाम व विशेषताओं से परिचय, आदर्श सस्वर वाचन, कंठस्थीकरण।

काव्य पंक्तियों का सरलार्थ :

• चित्रकार का सपना है यह।

इसका अर्थ है कि चित्रकार किस प्रकार के चित्रों को बनाने तथा रंग-संयोजन का सपना प्रायः देखा करता होगा। प्रकृति में फूलों का होना कुछ-कुछ वैसा ही है। अलग-अलग आकार, रंग व गुणों से भरी यह फूलों की घाटी कल्पना के नए-नए आयाम देती है। इतना सौंदर्य व मनोहारी चित्रण किसी सपने जैसा ही है।

• फूलों को पहचानो तुम।

इस पंक्ति में पाठकों से विनती की जा रही है कि फूलों की अपनी भाषा है—संवेदना है। तुम उन्हें छूकर उनकी कोमलता, पवित्रता व सुंदरता को महसूस कर सकते हो। उनकी भाषा को समझ सकते हो। अतः उन्हें महसूस कर उनके प्रति संवेदनशील बनना चाहिए।

पाठ्यपुस्तक का अभ्यास

पाठ-ज्ञान

- बच्चे स्वयं कविता की पंक्तियाँ पूरी करेंगे।
- घाटी — वाटी लजाती — सजाती
सरसों — परसों बनते — कहते
जानो — मानो बिछाया — सजाया
जाल — थाल प्यार — तैयार
- (क) कमरे, (ख) मंदिर, (ग) मूर्ति, (घ) नेहरू।

भाषा-ज्ञान

- मंदिर, बंदर, गंदा, रंग, इंद्र।
चाँद, आँख, भँवरा, ऊँचा, गाँव।

लिखो

- बच्चे कठिन शब्दों का अभ्यास स्वयं करेंगे।

बताओ

- बच्चे स्वयं अपने अनुभव से लिखेंगे।

खेल-खेल में

- बच्चे स्वयं कविता याद करेंगे और शिक्षक/शिक्षिका को कविता सुनाएँगे।

अभ्यास-पुस्तिका

1. केसर, गुलाब, मोतिया, सरसों, चमेली, चंपा, सूर्यमुखी, जूही।
2. सरसों – परसों बिछाया – सजाया पहचानो – जानो
लजाती – इतराती प्यार – वार बहार – बारंबार
3. त्त – पत्ता, सत्ता | ल्ह – दूल्हा, लहासा
ब्द – शब्द, शताब्दी | ष्ट – अष्टमी, कष्ट
ब्ज – कब्ज, नब्ज | च्छ – अच्छा, स्वच्छ
4. (क) जूही शरमाती-लजाती है,
चमेली भी तो इतराती है।
चंपा ने है जाल बिछाया,
सूर्यमुखी ने थाल सजाया।
(ख) फूलों को पहचानो तुम,
छूकर उनको जानो तुम।
फूलों की भाषा होती है,
शब्दों की रचना होती है।
5. (क) परसों, (ख) चमेली, (ग) चंपा ने, (घ) सूर्यमुखी ने,
(ङ) भँवरा, (च) तितली, (छ) बहार।
6. वह, उससे, मुझे, मैंने, अपने, मैं, इनकी।
7. बच्चे स्वयं करेंगे।

